मई 2016

दादावाणी

कीमत ₹ 10

डाँटने से तो बच्चे बिगड़ जाते हैं, सुधरते नहीं है। बच्चों से तो समझा-बुझाकर काम लेना पड़ता है। बच्चों को सुधारने और संस्कार देने के लिए प्रेम जैसी कोई भी औषधि नहीं है।

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 11 अंक : 7
अखंड क्रमांक : 127
मई 2016

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल
भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

ज्ञानी की दृष्टि से सर्टिफाइड फादर-मदर

संपादकीय

पारिवारिक जीवन में माँ-बाप बच्चों का व्यवहार आदर्श कैसे बने उसके लिए सभी दिन-रात प्रयत्न करते हैं। लेकिन इस कलियुग में तो माँ-बाप बच्चों के बीच जब बात-बात में मतभेद होते हुए दिखाई देते हैं, तब वास्तव में दुःख हो जाता है। वैसे तो राग-द्वेष के बीच में लटका हुआ माँ-बाप बच्चों का व्यवहार हर एक काल में होता है। इस काल में द्वेष का व्यवहार अधिक दिखाई देता है।

अत्यंत अपेक्षा की वजह से ज़्यादातर माँ-बाप की शिकायतें रहती हैं कि, 'बच्चे हमारी सुनते नहीं हैं, पढ़ते नहीं हैं, गुस्ताखी करते हैं, बिगड़ गए हैं।' तब उन्हें परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) टोकते हैं कि, कौन से कॉलेज से माँ-बाप बनने का सर्टिफिकेट लिया था? संस्कार देने के लिए संस्कार सिंचन का ज्ञान होना चाहिए न? संस्कारी ही अन्य किसी को संस्कारी बना सकता है। 'अनसर्टिफाइड फादर्स एन्ड मदर्स,' माँ-बाप के लिए ज्ञानी को ऐसे कठोर शब्द कहने पड़े, तो क्या वे यों ही कहते होंगे?

तब माँ-बाप को प्रश्न होता है कि 'हम क्वालिफाइड हैं या नहीं, वह समझ में कैसे आएगा?' तब दादाश्री कहते हैं कि, बच्चों का आपके साथ जैसा व्यवहार है, उस पर से आपके क्वालिफिकेशन का नाप निकलता है। रोज़-बरोज़ के जीवन में जो परेशानियाँ खड़ी होती हैं, जैसे कि बच्चे के क्रोध को रोकने के लिए क्या करना चाहिए? क्या बच्चे को टोक सकते हैं, डाँट सकते हैं, मार सकते हैं? अगर पढ़ाई में डल (कमज़ोर) हो, तो कैसे पढ़ाना चाहिए? देर से उठनेवाले बच्चे को कैसे सुधारें? व्यवहार में बच्चे के साथ मनमेल टूट जाए तो कैसे मेल बिठाएँ? बच्चों के मूल संस्कार माँ-बाप पर निर्भर हैं। बच्चा यानी अंत में तो माँ-बाप का ही आईना है। अगर बच्चा आपके विरोध में है तो उसकी जड़ में आपकी ही भूल है।

प्रस्तुत अंक में बच्चों की साइकॉलोजी समझाते हुए दादाश्री कहते हैं कि 'जिस चीज़ के लिए बच्चे को आग्रहपूर्वक मना करते हैं, उसी को वह पहले करता है। इस तरह आमने-सामने अहंकार टकराते हैं। आज की जनरेशन के बारे में दादाश्री ने खोज निकाला है कि आज का युवा वर्ग हेल्दी माइन्डवाला है। अलग ही तरह का साफ मन लाए हैं। खुद के मोह में मस्त रहते हैं, लेकिन कम कषाय, कम ममता, तेजो द्वेष जैसे अपलक्षणों से परे, पढ़े-लिखे लेकिन कम समझदार।

और फिर यह जनरेशन गेप, दो पीढ़ियों के अंतर को दूर करने के लिए माँ-बाप को ही पहल करनी पड़ेगी। ऐसा नहीं होने की वजह से मतभेद व मनभेद चलते ही रहते हैं। फिर भी दादाश्री की मौलिक व्यवहार कला से अगर बच्चों को गढ़ना हो, तो आसानी से गढ़ा जा सकता है। प्रस्तुत संकलन में समायी हुई ज्ञानी की समझ, माँ-बाप को अपने बच्चों के साथ आदर्श व्यवहार प्रस्थापित करने में मददगार होगी, यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

ज्ञानी की दृष्टि से सर्टिफाइड फादर-मदर

काबिलीयत बढ़ाएँ क्वालिफाइड पेरेन्ट्स की

प्रश्नकर्ता : माँ-बाप के तौर पर हमारे जो एक्स्पेक्टेशन (अपेक्षाएँ) हैं, चाइल्ड अगर उसके अनुसार बिहेव नहीं करता और हमारे कहने के बावजूद भी वह उस अनुसार नहीं करता, तो उसे कैसे कंट्रोल करें?

दादाश्री : जब माँ-बाप बनना नहीं आता तब ऐसी परेशानी होती है। आपमें बाप बनने की काबिलीयत नहीं है इसलिए बच्चे नहीं सुनते। हमें पहले से ही काबिल बनकर बाप बनना चाहिए था। अरे, क्या उसके लिए पढ़ाई नहीं करनी चाहिए?

प्रश्नकर्ता : पढ़ाई करनी चाहिए न!

दादाश्री : क्या वह ज़िम्मेदारी नहीं है?

प्रश्नकर्ता : ज़िम्मेदारी है न!

दादाश्री : इसलिए बच्चे संभालना तो बहुत कठिन है। यह ज़िम्मेदारी तो बहुत बड़ी है लेकिन लोग इसमें क्वालिफाइड नहीं होते और उन्हें भी बच्चे हो जाते हैं। क्वालिफिकेशन लेने के बाद ही बाप बनना चाहिए। डॉक्टर भी क्वालिफाइड होते हैं या अन्क्वालिफाइड होते हैं?

प्रश्नकर्ता : क्वालिफाइड।

दादाश्री : तो फादर बनने में अन्क्वालिफाइड?

प्रश्नकर्ता : क्वालिफाइड हैं या नहीं, वह कौन तय करेगा?

दादाश्री : अगर बच्चों के साथ ऐसा बरताव हो जाए तो क्वालिफाइड हैं ही नहीं न! बच्चों को संभालना न आए, बच्चे बिगड़ जाएँ, तो हम क्वालिफाइड नहीं हैं, वह बात तय हो गई न। आपको क्या लगता है? बोल क्यों नहीं रहे? कुछ क्वालिफिकेशन चाहिए या नहीं चाहिए? फिर बच्चे ऐसे ही हो जाएँगे न! इसलिए मुझे कहना पड़ा कि फादर बनने की काबिलीयत का सर्टिफिकेट लेने के बाद शादी करनी चाहिए।

सर्टिफाइड फादर-मदर अर्थात्?

प्रश्नकर्ता : 'सर्टिफाइड फादर-मदर' की परिभाषा क्या है?

दादाश्री : अगर कोई बाप या माँ बच्चे से हृदय को स्पर्श करनेवाली वाणी में बात करें, तो वे सर्टिफाइड फादर-मदर कहलाते हैं।

'अन्सर्टिफाइड' माँ-बाप अर्थात् अपने बच्चे अपने कहे अनुसार न चलें, अपने बच्चे अपने प्रति प्रेम न रखें, परेशान करें! वे माँ-बाप 'अन्सर्टिफाइड' ही कहलाएँगे न?

अगर फादर सर्टिफाइड है तो उसके बच्चे कैसे होते हैं? ऐसा होता है कि बच्चे ऐसे उछल-कूद करें या ऐसा नहीं होता!

प्रश्नकर्ता : सर्टिफाइड फादर-मदर के बच्चे कैसे होते हैं?

दादाश्री : संस्कारी होते हैं। उसके घर में बाप चाहे कुछ भी बोल दे तो भी बच्चा कहेगा, 'नहीं मैं कुछ नहीं बोल सकता, पूज्य हैं मेरे!

प्रश्नकर्ता : क्वालिफाइड पेरेन्ट्स बनने का क्वालिफिकेशन मिलेगा कहाँ?

दादाश्री : अगर मेरे पास आए तो मैं उसे सिखा दूँगा। क्योंकि मैं भूल मिटानेवाला हूँ न! किसी भी पुस्तक में ऐसा लिखा हुआ नहीं है कि अन्क्वालिफाइड फादर्स एन्ड अन्क्वालिफाइड मदर्स। इन्डिया में सब लोग पूछने आते हैं कि 'हमें खुद समझ में नहीं आ रहा है कि हम अन्क्वालिफाइड हैं, तो अब हम क्वालिफाइड कैसे बन सकते हैं?' तब हम समझा देते हैं कि बच्चों के साथ कैसा बरताव करना चाहिए, कैसा नहीं! वैसे कुछ भी बनकर बैठ गए हैं और फिर ऐसा कहते हैं कि मैं पति.. अरे! भाई, ढंग तो देखो तुम्हारा! पति हो, तो पत्नी तुम्हारा मानती तो नहीं है। उसका प्रभाव पड़ना चाहिए। पति का तो प्रभाव पड़ना चाहिए। बगैर बोले ही प्रभाव पड़ना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : ये 'अन्सर्टिफाइड' 'फादर' और 'मदर' बन गए हैं इसलिए यह 'पज़ल' खड़ी हो जाती है?

दादाश्री : हाँ, वर्ना बच्चे ऐसे होते ही नहीं, बच्चे आज्ञाकारी होते। माँ-बाप का ही ठिकाना नहीं है। ज़मीन ऐसी है, बीज ऐसा है, माल खराब है! और फिर कहते हैं कि 'मेरे बच्चे महावीर जैसे बनेंगे।' कहीं महावीर जैसे होते होंगे? महावीर की माता कैसी होती है। बाप उल्टा-सीधा हो तो चल सकता है, लेकिन माँ कैसी होती है!

क्वालिफाइड फादर तो कब बन सकते हैं? जब भगवान महावीर का विज्ञान समझ में आ जाए तब फादर बन सकते हैं। क्वालिफाइड फादर बनने का मतलब तो कितने गुण होने चाहिए और कितनी ज़िम्मेदारी है! यह तो फादर बन बैठे और बच्चे के साथ किच, किच, किच! पूरे दिन क्लेश, क्लेश, क्लेश! अरे, भाई, कैसे इंसान हो? चाहे कैसे भी फादर-मदर बन गए! क्या ऐसा चलेगा?

कमज़ोरी न दिखाई दे, वही क्वालिफिकेशन

प्रश्नकर्ता : तो कौन सी क्वालिफिकेशन होनी चाहिए?

दादाश्री : क्वालिफिकेशन तो, खुद में कमज़ोरी नहीं होनी चाहिए और अगर है तो उससे सिर्फ खुद को ही परेशानी, अन्य किसी को, बच्चों को भी परेशानी न हो, ऐसे जीना चाहिए। बच्चों की नर्सरी कैसे करनी चाहिए, ऐसा सब पता होना चाहिए। यों ही माँ-बाप बन गए! इसके बजाय तो कुत्ते-कुतिया के माँ-बाप अच्छे हैं कि कभी भी लड़ाई-झगड़ा नहीं। ठीक न लगे तो अलग। जबकि यहाँ तो बाप समझता है कि 'पूरी दुनिया में मैं ही ज्ञानी हूँ।' उस तरह बच्चों को डाँटता है। 'मेरा सही है तुझ में समझ नहीं हैं,' कहता है। यह अक्ल का बोरा, बड़ा आया बाप!

प्रश्नकर्ता : ऐसा मान लेने का कोई कारण नहीं है कि हर एक फादर इसी तरह बरताव करता है।

दादाश्री : ऐसा मान लेने का कोई कारण नहीं है, लेकिन मान लो कि मैं उसके घर जाकर चार दिन रहूँ, तो सब पता चल जाएगा। यह तो सब ठीक है, यह अंधेर चल रहा है। अपने-अपने कर्म के उदय से सब कुछ चल रहा है। वह ऐसा

समझता है कि 'मेरी वजह से यह बच्चा बड़ा हुआ है।' जीवन तो ऐसा होना चाहिए कि खुद की कमज़ोरी दिखाई नहीं देनी चाहिए। क्रोध-मान-माया-लोभ रूपी कमज़ोरियाँ दिखाई नहीं देनी चाहिए।

बच्चों ने 'अन्सर्टिफाइड मदर' के पेट से जन्म लिया है तो उसमें बच्चे क्या करें? बीस-पच्चीस साल का होते ही वह बाप बन जाता है लेकिन अभी तो उसी का बाप उसकी शिकायतें करता है! यह तो राम भरोसे 'फादर' बन जाता है! इसमें बच्चे का क्या कसूर है? ये तो 'अन्क्वालिफाइड फादर और अन्क्वालिफाइड मदर।' कुछ क्वालिफिकेशन होनी चाहिए। यहाँ पर क्या क्वालिफाइड होने के बाद लोगों को बच्चे होते हैं? क्या फादर बनने के कॉलेज में जाने के बाद, पास होने के बाद बनते हैं? क्या कॉलेज में पास नहीं हुए थे? वास्तव में तो पहले टेस्टिंग करवाकर, 'सर्टिफिकेट' प्राप्त करने के बाद ही शादी करने की छूट होनी चाहिए। परीक्षा में पास हुए बगैर 'सर्टिफिकेट' बिना तो 'गवर्मेन्ट' में भी नौकरी पर नहीं रखते, तो इसमें 'सर्टिफिकेट' बगैर शादी कैसे करवा सकते हैं? परीक्षा देकर पास होना चाहिए, परीक्षा नहीं देनी चाहिए क्या? कारकून के काम में भी परीक्षा लिए बगैर, पास हुए बगैर प्रवेश नहीं करने देते, तो उसे बाप कैसे बनने दे सकते हैं? जिसके बच्चे प्रधानमंत्री बननेवाले हैं, क्या उसे 'सर्टिफिकेट ' के बिना, बाप बनने देना चाहिए? ऐसा होना चाहिए? कारकून भी पढ़े-लिखें ढूँढते हैं, हैं न? सर्टिफिकेट चाहिए न। इसमें सर्टिफिकेट नहीं होता? नो सर्टिफिकेट? और जिनकी रिस्पोन्सिबिलिटी प्रधानमंत्री से भी ज़्यादा है, बच्चों को सँवारने की, उसके लिए उसमें सर्टिफिकेट नहीं?

माँ या बाप के तौर की ज़िम्मेदारी देश के प्रधानमंत्री के तौर की ज़िम्मेदारी से भी ज़्यादा है, प्रधानमंत्री से भी बड़ा पद है।

क्वालिफाइड माँ कैसे बनें?

प्रश्नकर्ता : तो क्वालिफाइड माँ कैसे बनें, उसकी शुरुआत कैसे करनी चाहिए।

दादाश्री : वह तो ऐसा है न, एक तो किसी को माँ बनना ही नहीं आता। जब लड़ाई-झगड़े हों तब क्या करना चाहिए, बच्चा रो रहा हो तब क्या करना चाहिए, ये सारी कलाएँ जाननी चाहिए न! मार पिटाई करते हैं वे तो..

प्रश्नकर्ता : ऐसा नहीं करना है। जानने की इच्छा है कि माँ कैसे बनें?

दादाश्री : बच्चा ज़िद करे और हम भी ज़िद करें, तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : माँ ज़िद करे और बच्चा भी ज़िद करे, तो अंत में तो बच्चा ही मार खाता है।

दादाश्री : नहीं, लेकिन उसका तो कोई अर्थ ही नहीं है न। यानी बच्चे की ज़िद छुड़वानी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : कैसे छुड़वाएँ?

दादाश्री : उसकी प्रकृति जिसमें खुश होती हो, थोड़ी देर के लिए कुछ मीठी बातें करके खुश कर देने से फिर गाड़ी चलने लगेगी, फिर *आड़ाई* (अहंकार का टेढ़ापन) चली जाएगी। जितनी देर के लिए *आड़ाई* करे, उतनी देर तक बहलाना-फुसलाना करना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अगर बेटा टेढ़ा हो, तो हमें क्या करना चाहिए?

दादाश्री : लेकिन टेढ़े को ही ऐसा करना

पड़ता है न। बहला-फुसलाकर कर एक बार सीधा कर दें फिर चलता रहता है। लेकिन यह तो और भी टेढ़ा बना देते हैं, लोग। उसके साथ खुद भी टेढ़े बन जाते हैं। अगर बेटा बात न करे तो माँ भी बात नहीं करती।

प्रश्नकर्ता : हाँ, मुँह फुला लेती है।

दादाश्री : मुँह फुलाती है। तो फिर ये तो माँ बनने के लक्षण ही नहीं हैं न! लोगों का देख-देखकर.. अन्य कोई माँ मारती है तो यह भी मारती है। बच्चा चोरी करके आए, तब दूसरे मारते हैं तो यह भी मारती है और फिर कहती क्या है कि, 'मेरी कोख बदनाम की!' लेकिन वह तेरी कोख तो थी ही ऐसी, अच्छी थी ही कहाँ? और यों ही 'बदनाम की-बदनाम की,' कह रही है तू! अच्छी होती तो, ऐसे पवित्र पुरुष कहाँ से पैदा होते! अच्छी होती तो क्या बदनामी करता? और कलियुग में तो ऐसा ही माल आता है। किसने कहा था कि कलियुग तक बैठे रहना? इस कलियुग में तो बच्चे वगैरह सब बैर भाव के कारण मिले हैं। किस तरह के मिले हैं? बैर पूरा करने के लिए।

प्रश्नकर्ता : जो बैर पूरा करने के लिए आ मिले हैं, उसी से प्रेम करना है!

दादाश्री : उसके साथ वापस बैर न बंधे, उस तरह से ज्यों-त्यों करके निबेड़ा ला देना है। सत्युग में सब जगह प्रेमभाव से आते थे। इसलिए बहन, ज्यों-त्यों करके निबेड़ा ला देना है। अगर हम बच्चों को अच्छे संस्कार दें, अच्छी तरह से रखें तो कुछ ढंग से रहेंगे। अगर कहीं अच्छे संस्कार मिलें ऐसी जगह हो तो वहाँ पर ले जाना, तो वहाँ काम बनेगा। ऐसा है न, अगर गुलाब के पौधे की देखरेख करने की अक्ल हो, तो गुलाब का पौधा वास्तव में खिल उठता है और अगर अक्ल न हो और महीनों तक पानी डालना भूल गए, तो फिर वह सूख जाता है।

गुस्से में छिपी है माँ-बाप की कमज़ोरी

प्रश्नकर्ता : हम तो बेटे से कहते हैं कि भाई, सुबह जल्दी उठो, जल्दी उठकर पढ़ाई करो, लेकिन आजकल के सभी बच्चे देर से ही उठते हैं, सूर्यवंशी! बेटा दस बजे तक सोता रहता है, इसलिए मुझे गुस्सा आ जाता है और मैं मानता हूँ कि गुस्सा वाजिब है। अब घर में रोज़ की यही टसल (लड़ाई) चलती रहती है।

दादाश्री : हाँ, लेकिन गुस्सा आएगा तो फिर बेटा सुनेगा नहीं। अगर गुस्सा न आए तो बेटा आपकी बात मानेगा। आपकी कमज़ोरी देखता है, इसलिए वह समझ जाता है कि 'इनका स्वभाव ही ऐसा है। विचित्र स्वभाववाले हैं' और बाहर के लोगों से कह देता है कि 'मेरे फादर इतने विचित्र स्वभाव के हैं कि बात-बात पर चिढ़ते रहते हैं। पिता तो प्रभावशाली होने चाहिए। अगर बाप बेटे पर गुस्सा न करे न, तो बेटा कहे अनुसार ही करेगा। यह तो गुस्सा होते हो तो उसे कमज़ोरी दिखाई देती है न, तो गुस्सा हो जाता है कि 'मैं यहाँ कहाँ से फँस गया! ऐसे माँ-बाप क्यों मिले।' मन में ऐसा सब भर जाता है। बच्चे मुझ से कह देते हैं कि, 'हमारे माँ-बाप तो एकदम कन्डेम (बेकार) हैं।' हमें कन्डेम नहीं रहना चाहिए। हमें बिल्कुल करेक्ट रहना चाहिए ताकि कमज़ोरी पैदा न हो। अगर ऐसी कमज़ोरी आती है तो उसके बजाय कुछ नहीं कहना बेहतर है। एक जगह पर बैठे रहना चाहिए और कहने से सुधरता भी नहीं है। जब तक कमज़ोरी रहेगी तब तक सुधरेगा भी नहीं। तब तक तो वह आपको दिखाने के लिए करेगा,

लेकिन बाद में मन में गलत भाव करेगा। बच्चों से समझा-बुझाकर काम लेना चाहिए।

उसकी प्रकृति अलग है इसलिए वह देर से उठता है और ज़्यादा काम करता है जबकि यह आलसी चार बजे से उठकर भी कुछ नहीं करता। मैं भी हर एक काम में हमेशा 'लेट' (देर से) रहता था। स्कूल की घंटी सुनने के बाद घर से निकलता और हमेशा मास्टर साहब की डाँट सुनता था। अब मास्टर को क्या पता कि मेरी प्रकृति कैसी है? हर एक का 'रस्टन' अलग, 'पिस्टन' अलग-अलग होता है।

प्रश्नकर्ता : समाज की व्यवस्था का भी ध्यान रखना पड़ता है, वर्ना वह अव्यवस्थित नहीं हो जाएगी?

दादाश्री : नहीं, उसे समाज की व्यवस्था का ध्यान रखना नहीं कहा जाएगा। यह तो नासमझी से कैसा भी बरताव करता है, इस तरह ऐसे गुस्सा करने की ज़रूरत नहीं है। समाज ऐसा नहीं कहता कि गुस्सा करो।

कहना या नहीं कहना, दोनों ही गुनाह

प्रश्नकर्ता : तो क्या हम उन्हें कुछ भी न कहें?

दादाश्री : नहीं कहना भी गुनाह है और 'कहते रहना' भी गुनाह है। कहना है और राग-द्वेष नहीं करने हैं।

एक भाई कहने लगे 'हमारा भतीजा रोज़ नौ बजे उठता है। घर में कुछ काम नहीं हो पाता।' फिर घर के सभी लोगों से पूछा कि 'यह जल्दी नहीं उठता, वह आप सभी को पसंद नहीं है?' तब सभी कहने लगे कि 'हमें पसंद नहीं है, फिर भी वह जल्दी उठता ही नहीं है न।' मैंने कहा 'सूर्यनारायण के निकलने के बाद तो उठ जाता है या नहीं उठता?' तब कहने लगे कि, 'उसके भी एक घंटे बाद उठता है।' इसलिए मैंने कहा कि 'सूर्यनारायण की भी मर्यादा नहीं रखता? फिर तो वह बहुत बड़ा व्यक्ति होगा न? वर्ना लोग तो सूर्यनारायण के निकलने से पहले खुद उठ जाते हैं लेकिन यह तो सूर्यनारायण की भी परवाह नहीं करता!' फिर वे लोग कहने लगे, 'अब आप ही डाँटिए उसे।' मैंने कहा, 'मैं नहीं डाँट सकता। हम डाँटने नहीं आए हैं हम समझाने आए हैं। हमारा व्यापार डाँटने का है ही नहीं। हमारा तो समझाने का व्यापार है।' फिर उस लड़के से कहा कि 'दर्शन कर ले और कहना कि दादा, मुझे जल्दी उठने की शक्ति दीजिए।' इतना करवाने के बाद घर के सभी लोगों से कहा कि 'अब अगर वह चाय के समय पर नहीं उठे तो आप पूछना कि भाई तुझे ओढ़ा दूँ। ठंड का मौसम है इसलिए अगर ओढ़ना हो, तो ओढ़ा दूँ। मज़ाक में नहीं, सचमुच में उसे ओढ़ा देना है। घर के लोगों ने ऐसा ही किया तो छः महीने से वह भाई इतना जल्दी उठने लगा है कि घर के सभी लोगों की शिकायत खत्म हो गई।

अपना क्रोध बंद, तो बच्चे का क्रोध बंद

प्रश्नकर्ता : कितनी बार बच्चे बहुत हॉट टेम्परवाले होते हैं, तो क्या करें?

दादाश्री : उसके लिए तो अन्य कोई इलाज करने के बजाय इस तरह से रहना चाहिए कि बच्चे माँ-बाप को गुस्सा करते हुए देखें ही नहीं। देखकर उसे लगता है कि 'मेरे फादर करते हैं, मैं उससे भी ज़्यादा गुस्सा करूँगा, तभी ठीक रहेगा।' अगर आप बंद कर दोगे तो अपने आप बंद हो जाएगा। मैंने गुस्सा करना बंद कर दिया है, मेरा बंद हो गया है, तो मेरे साथ भी कोई

नहीं करता। मैं कहता हूँ कि गुस्सा करो तो भी नहीं करते। बच्चे भी नहीं करते। अगर मैं मारूँ तब भी गुस्से नहीं होंगे।

उन पर फिर प्रभाव पड़ेगा कि 'अरे! ये कैसे इंसान हैं। देखो न, मैंने उन्हें गुस्सा किया है, फिर भी कैसे शांत हैं ये!' लेकिन आजकल तो ऐसा प्रभाव ही कहाँ पड़ता है? अगर बच्चा चिढ़े तो बाप बारह गुना चिढ़ता है। तब बच्चा कहेगा, 'आ जाइए।'

ये जितने भी माँ-बाप बच्चों को डाँटते हैं, उस बात को बच्चे नोट नहीं करते। इसके बजाय अगर नहीं डाँटते हैं, तो उसे नोट करते हैं। क्योंकि इस दुषमकाल में फादर के प्रति इतनी पूज्यता नहीं है! दुषमकाल के प्रताप के कारण गलत करते हैं!

समझाकर साधारण टोकना, सुधारता है बच्चे को

अगर बच्चे से प्याले गिर जाएँ और टूट जाएँ, तो वह बेचारा तो घबरा जाएगा। प्याले टूट गए तो उसे डाँटना नहीं है लेकिन कहना है कि, 'जल्दी क्यों मचा रहा है? धीरे-धीरे चल।' टोकना तो चाहिए। हर एक बात में टोकना तो चाहिए। यों ही नहीं लेकिन साधारण टोकना चाहिए। यह तो कहता है, 'मैं कुछ नहीं कहता।' फिर बच्चे समझते हैं कि हम जो भी (जितना) कर रहे हैं, सब करेक्ट ही है। पापा खुश होकर स्वीकार कर लेते हैं।' वे ऐसा मान लेते हैं कि वे खुद जो भी कुछ भी करते हैं, वह करेक्ट ही है। अगर इनकरेक्ट (गलत) हो तो सावधान करो कि 'यह गलत है। यहाँ नहीं, ऐसा नहीं चलेगा।' उसके बाद चला लेना पड़ेगा। लेकिन हमें कहना तो चाहिए। वह ऐसा समझ नहीं ले कि, 'मैं जो भी कहता हूँ, करता हूँ सब ठीक ही है।'

अतः बच्चों को डाँटना नहीं है लेकिन उसे पूछना है कि 'भाई, जला नहीं है न?' तब कहेगा, 'नहीं जला।' तब हमें कहना है कि 'ज़रा धीरे-धीरे चल।' इतना एक ही वाक्य कहने की ज़रूरत है, 'तू सोचना इस पर।' तो फिर वह सोचेगा कि 'कहाँ मेरी गलती हो रही है।' वह जाँच-पड़ताल करेगा। अगर उसे मारोगे तो फिर वह क्या कहेगा, 'ऐसा ही करूँगा।' यों उल्टा चलेगा। अपने इन्डियन लोग, कैसे चलते हैं? उल्टा चलना इन्डियन का स्वभाव है। आप अगर मारोगे न तो कहेगा, 'अब ऐसा ही करूँगा। जाओ, आप से जो बन पड़े वह कर लेना।' ऐसा होता है या नहीं? आपको क्या लगता है, उल्टे चलते है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : चलते हैं।

दादाश्री : इसलिए ऐसा उल्टा मत चलने देना। बल्कि बिगाड़ते हैं। उसके सिर पर हाथ फेर कर कहना है, 'भाई, अब ऐसा करना कि वापस ऐसा न हो। अपने कितने पैसों का नुकसान हो गया, देखो। और तुम्हारा नुकसान हुआ न! मेरा कहाँ हुआ? ये तेरे हिस्से के बेकार गए न।' ऐसा कहने से फिर समझ जाएगा। वह सब समझता है और वह नहीं तोड़ता है। वास्तव में तो कुदरत तोड़ती है, वर्ना प्याले के कारखानेवाले का काम ही चलेगा नहीं। यह तो मैं देखकर बोल रहा हूँ, यह गप्प नहीं है। एक्ज़ेक्ट कह रहा हूँ मैं आपसे। इसलिए पहले घर के झगड़े बंद हो जाने चाहिए। यानी बच्चे के हाथों अगर कुछ टूट जाएँ तो डाँटना मत।

प्रश्नकर्ता : टूटने पर तो नहीं डाँटती हूँ।

दादाश्री : तब क्या करने पर डाँटती हो?

प्रश्नकर्ता : पेप्सी ज़्यादा पीए, कोक ज़्यादा पीए या चोकलेट ज़्यादा खाए, तब डाँटती हूँ।

दादाश्री : उसमें डाँटने की क्या ज़रूरत है? उसे समझाना चाहिए कि ज़्यादा खाने से नुकसान होगा। तुझे कौन डाँटता है? यह तो बड़प्पन का गलत अहंकार है। 'माँ' बनकर बैठ गए बड़े! माँ बनना आता नहीं और पूरे दिन बच्चे को डाँटती रहती है। वह तो जब सास डाँटने लगे न, तब आपको पता चलेगा। बच्चे को डाँटना किसी को अच्छा लगता है? बच्चे के मन में भी ऐसा होगा कि 'यह तो सास से भी खराब है।' इसलिए तू बच्चे को डाँटना छोड़ दे। धीरे से समझाना कि, 'इसे मत खाना बेकार तेरा शरीर बिगड़ जाएगा।

आप चेहरा बिगाड़े बिना डाँटो। चेहरा अच्छा रखकर डाँटो, बहुत डाँटो! आपका चेहरा बिगड़ जाता है इसका मतलब आप जो डाँटते हो वह अहंकार से डाँटते हो।

सुपरफ्लुअस डाँटना चाहिए, जैसे नाटक में झगड़ते हैं वैसा होना चाहिए। नाटक में 'तू ऐसा कर रहा है? वगैरह सब बोलते हैं लेकिन तब अंदर कुछ नहीं होता, उस तरह से डाँटना चाहिए।

बिना पूर्वग्रह के डाँटा हुआ काम का

डाँटने से तो बच्चे बिगड़ जाते हैं, सुधरते नहीं हैं। और फिर कौन सी माँ में बरकत है जो बच्चे को डाँटती रहती है? माँ में बरकत होनी चाहिए न? डाँटा हुआ कब काम का है? अगर पूर्वग्रह न हो तो डाँटा हुआ काम का। पूर्वग्रह यानी कल डाँटा हो तो मन में तो याद ही रहता है कि 'यह ऐसा ही है, ऐसा ही है' और फिर वापस डाँटती है। इसलिए फिर उससे ज़हर फैलता है। इसे भगवान ने भयंकर रोग कहा है। मूर्ख बनने की निशानी, एक शब्द भी नहीं बोलना चाहिए।

अपना दिमाग़ खराब करना, मूर्ख बनना, वह कहाँ की बात हुई? खुद मूर्ख बनता है और फिर दिमाग़ खराब करता है, कोई सार नहीं निकलता। लेकिन घर में बिल्कुल भी झगड़ना नहीं चाहिए। घर के लोग अपने लोग कहलाते हैं।

चिढ़कर नया लोन मत लेना

बच्चों पर अगर आप चिढ़ जाओगे तो उसकी वह नया लोन कहा जाएगा। क्योंकि चिढ़ने में हर्ज नहीं है लेकिन आप 'खुद' चिढ़ जाते हो उसमें हर्ज है।

प्रश्नकर्ता : नया लोन किसे कहते हैं?

दादाश्री : अगर अपना बेटा कॉलेज में है और ठीक से पढ़ाई न करता हो, तब आप उस पर बहुत चिढ़ जाते हो तो उसे नया लोन लेना कहा जाएगा। जो पुराना लोन था वह तो अभी आपसे भरा नहीं गया और उससे पहले आपने नया लोन ले लिया। नियम क्या कहता है? चिढ़ने का कोई नियम नहीं है। वह आउट ऑफ कॉन्ट्रैक्ट कहलाएगा। कॉन्ट्रैक्ट की शर्त से हटकर यह हुआ है। यानी 'एक्स्ट्रा आइटम' हो जाता है। इससे नये कर्ज चढ़ जाते हैं। इस तरह पुराने कर्ज चुकाता है और नए कर्ज लेता जाता है।

किचकिच करने के बजाय मौन रहना अच्छा है

डाँटने से इस संसार में कुछ भी सुधरनेवाला नहीं है। उल्टे मन में अहंकार करता है कि 'मैंने बहुत डाँटा।' डाँटने के बाद अगर देखो तो माल जैसा था, वैसा ही रहता है, पीतल का हो वह पीतल का और काँसे का हो तो काँसे का ही रहता है। पीतल को मारते रहो तो क्या वह काला पड़े बगैर रहेगा? नहीं रहेगा। कारण क्या है? काला होने का स्वभाव है उसका। इसलिए मौन रहना चाहिए।

यह किच-किच करने के बजाय मौन रहना अच्छा है, न बोलना अच्छा है। सुधरने के बजाय बल्कि बिगड़ जाता है, इसलिए एक शब्द भी नहीं कहना चाहिए। अगर बिगड़ जाए तो उसकी ज़िम्मेदारी हमारी है।

प्रश्नकर्ता : डाँटने के बजाय मौन रहने से सामनेवाले व्यक्ति में फर्क आता है?

दादाश्री : हाँ, बहुत फर्क आ जाता है। मौन तो बहुत काम करता है।

प्रश्नकर्ता : किसी को सिखाना हो तो फिर मौन रहकर कैसे सिखा सकते हैं?

दादाश्री : वे तो सीख लेंगे, यों ही आ जाता है। सिखाने से बल्कि बिगड़ता है। यहाँ पूरा ज्ञान है, अगर हम मौन रहेंगे न तो ज्ञान ही उसे सब सिखा देगा। ज्ञान है ही उसे, बच्चों को भी ज्ञान है। फिर भी अगर कुछ कह देते हैं तो उसे हमें देखते रहना है।

समाधानपूर्वक कार्य करो

प्रश्नकर्ता : बच्चे कहना नहीं मानते, इसलिए कभी-कभी बच्चों को मारना पड़ता है।

दादाश्री : अगर नहीं मानते हैं, तो क्या मारने से मान जाते हैं? वह तो मन में गुस्सा रखेगा कि 'बड़ा होकर मेरी मम्मी को देख लूँगा।' मन में गुस्सा रखता है, हर एक जीव गुस्सा रखता है! खुद हमेशा समाधानपूर्वक कार्य करो, हर एक कार्य! मारना चाहते हैं तो पूछना चाहिए, 'भाई, अगर, तू कहे तो तुझे मारूँ, वर्ना न मारूँ।' अगर वह कहे कि 'मुझे मारो।' तो मारो, समाधानपूर्वक मार सकते हैं। यों ही कहीं मारा जाता होगा? वर्ना वह बैर बाँधेगा।

यह तो जीवन जीना भी नहीं आता। कुछ भी नहीं आता उसे। इस दुनिया को कैसे चलाना, वह भी नहीं आता! इसलिए फिर बच्चों को मारते रहते हैं। अरे! भाई, पीट रहा है तो ये क्या कपड़े हैं जो पीटता रहता है? बच्चों को मारते रहना, यह कोई तरीका है क्या? मानो पापड़ का आँटा गूँध रहे हों। एक व्यक्ति को मैंने इस तरह से मारते हुए देखा। जैसे हथोड़े से पापड़ का आँटा गूँधते हैं,

मारने से कुछ नहीं सुधरता। 'मशीन' को मारकर देखो? वह टूट जाएगी, वैसे ही ये बच्चे भी टूट जाते हैं। ऊपर से ठीक दिखते हैं लेकिन अंदर से टूट जाते हैं। बाहर ठीक लगते हैं लेकिन अंदर से टूट जाते हैं।

बच्चे तो फूल जैसे होते हैं। बच्चों को मारते रहें, तो वे रक्षण ढूँढते हैं। फिर जवान दोस्त मिल जाए तो हो गया, काम बन गया। हमें बच्चों को मारना नहीं चाहिए। बच्चों को तो मन में ऐसा लगना चाहिए कि कब घर पहुँचूँ और कब मेरे पापा जी के साथ बैठूँ। इतना प्रेम होना चाहिए। ये तो मारते रहते हैं इसलिए बेचारे को प्रेम ही नहीं आता। इसलिए हर कहीं भटक जाते हैं। समझने जैसी बात नहीं है यह?

बच्चों के साथ कैसा बरताव करना, क्या वह क्वालिटी नहीं होनी चाहिए? बच्चों को डाँटता रहता है, बाप बनना आता नहीं है तो फिर डाँटने की क्या ज़रूरत है? तुझे शर्म नहीं आती? बच्चे की ऐसी हालत कर दी?

प्रश्नकर्ता : उन लोगों को अगर सर्टिफिकेट लेना हो तो कहाँ जाना चाहिए?

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं। सर्टिफाइड होने चाहिए? आपके बच्चे कहना क्यों नहीं मानेंगे? बच्चे नहीं मानते तभी से अन्सर्टिफाइड हो गए।

आपके खेत के पौधे अगर आपको ही दुःख देते हों, तो आप किसान ही नहीं हो। इसलिए मैंने साफ-साफ लिखा है। कौन लिखेगा ऐसा? ऐसा खुला कोई लिखता होगा? सब मीठा-मीठा लिखते थे, और मुझे उन्हें छुड़वाना है कि यह समझो, ऐसा समझो। ऐसा कैसे चलेगा?

हैंडल ग्लास विथ केयर

'ग्लास विथ केयर' यानी ज़ोर से न फेंके और संभालकर उतारे। अपने बच्चे को ज़ोर से फेंकते हैं। अरे भाई, ये बच्चे तो 'ग्लास विथ केयर' हैं, संभालकर रख। लोग बच्चे को ज़ोर से फेंकते हैं। ये बच्चे यानी हमारे हिंदुस्तान की भावी पीढ़ी हैं। उन्हें कैसे बिगाड़ सकते हैं। इन्हीं को सब सौंपकर तो हमें दुनिया से जाना है।

यह बात आपके लिए बहुत हेल्प फुल रहेगी। समझ में आया न? आप तो एक ही बात करते हो, 'सुधरना चाहिए, सुधरना चाहिए।' अरे, लोग ऐसे नहीं सुधरेंगे। इस तरह से कहीं सुधारा जाता होगा? मैं आप सभी को काँच की तरह संभालता हूँ। क्योंकि आप तो ऐसी गलती कर देते हो, लेकिन मैं ऐसी गलती कैसे कर सकता हूँ? आपको संभालता हूँ या नहीं संभालता? फँसा हुआ है बच्चा, उसके संयोग पुख्ता हैं इसलिए क्या कहना चाहिए कि 'भाई...' प्रेम से ज्यों-त्यों उसे समझाकर उसके जो भाव हैं उन्हें बदलते रहना है।

मत पहुँचाओ ठेस किसी के अहंकार को

किसी के भी अहंकार को ठेस नहीं पहुँचनी चाहिए। अगर अहंकार को ठेस पहुँचे तो व्यक्ति से भेद हो जाता है, वापस कभी नहीं मिलेगा। हमें किसी से भी ऐसा नहीं कहना चाहिए कि 'तू यूज़लेस (बेकार) है, तू ऐसा है, वैसा है।' यों अपमान नहीं करना चाहिए। हाँ, डाँटो भले, डाँटने में हर्ज नहीं है, लेकिन किसी भी प्रकार से अहंकार को ठेस नहीं पहुँचनी चाहिए। सिर पर चोट लगे तो हर्ज नहीं, लेकिन उसके अहंकार पर चोट नहीं लगनी चाहिए। किसी का भी अहंकार भग्न नहीं करना चाहिए। जब सामनेवाले का अहंकार तोड़ते हैं, उस घड़ी वह अपने आप को दाँव पर लगा देता है।

बच्चों को सीधा करने के लिए तो प्रेम जैसी कोई औषधि ही नहीं है। लेकिन ऐसा प्रेम रह नहीं पाता न! व्यक्ति को गुस्सा आ ही जाता है न!

सख्ती नहीं, उसे बाप कहते हैं

प्रश्नकर्ता : बेटा अगर बाप की न माने तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : 'हमारी गलती है' ऐसा मानकर छोड़ देना है। आपकी गलती होगी तभी नहीं मानेगा न! जिसे बाप बनना आ गया, बेटा उसकी न माने, ऐसा कहीं होता होगा? लेकिन बाप बनना आता ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : बेटा अगर परेशान करे, तो फिर बाप को क्या करना चाहिए? तब भी क्या बाप को सख्ती नहीं करनी है?

दादाश्री : बच्चे, बाप के कारण ही परेशान करते हैं। इस दुनिया का नियम है ऐसा! अगर बाप में बरकत नहीं होगी, तो बच्चे परेशान किए बिना नहीं रहेंगे। और फिर ऐसा न्याय तो हम तुरंत ही कर देते हैं। बाप कहे कि, 'मेरे बच्चे परेशान करते हैं तो मैं कह देता हूँ कि तुझ में बरकत नहीं है। बच्चों का बाप बनना नहीं आता। बच्चे परेशान कैसे कर सकते हैं? खिला-पिलाकर बड़ा किया।'

''बाप बनना,' वह सद्व्यवहार कैसा होना चाहिए? बच्चों के साथ दादागिरी तो नहीं, बल्कि सख्ती भी नहीं करनी चाहिए, उसे 'बाप' कहते हैं।''

बच्चेरुपी आईने में मिलती है भूल खुद की

प्रश्नकर्ता : एक बार फादर बन जाने के बाद पिल्ले (बच्चे) छोड़ेंगे क्या?

दादाश्री : कहाँ छोड़ते हैं? पिल्ले तो पूरी ज़िंदगी ऐसे डॉग और डॉगिन दोनों को देखते रहते हैं, कि यह भौंकता रहता है और वह (डॉगीन) काटती रहती है। डॉग भोंके बिना रह नहीं पाता लेकिन अंत में दोष तो डॉग पर ही आता है। बच्चे अपनी माँ की तरफदारी करते हैं इसलिए मैंने एक व्यक्ति से कहा था, 'बड़े होकर ये बच्चे तुझे मारेंगे, इसलिए पत्नी के साथ सीधी तरह से रहना।' बच्चे उस समय देखते रहते हैं, जब तक उनका बस नहीं चलता तब तक, और जब बड़े हो जाते हैं तो फिर कमरे में बंद करके मारते हैं। लोगों के साथ ऐसा हुआ भी है। बच्चा उस दिन से *नियाणां* (अपना सारा पुण्य लगाकर किसी एक चीज़ की कामना करना) कर लेता है कि 'बड़ा होते ही बाप को दूँगा। मेरा सर्वस्व भले ही चला जाए लेकिन यह कार्य होना चाहिए,' उसे *नियाणुं* कहते हैं। यह भी समझने जैसा है न!

प्रश्नकर्ता : यानी सारा दोष बाप का ही है?

दादाश्री : बाप का ही! दोष बाप का ही है। बाप में बाप बनने की बरकत न हो, तभी पत्नी गुस्ताखी करती है। मार ठोककर गाड़ी राह पर लाते हैं बाप बनना नहीं आता, इसलिए यह सब बिगड़ गया है।

प्रश्नकर्ता : अगर बच्चे अंतिम दर्जे के निकलें तो उसमें बाप क्या करे?

दादाश्री : ये बच्चे आईना हैं। बच्चों पर से पता चलता है कि अपने में कितनी भूले हैं! मूलत: दोष बाप का ही है। वह क्यों भुगतता है? पूर्वजन्म में आचरण बिगाड़ा है, इसलिए तो ऐसी हालत हुई है न! जिसका कंट्रोल किसी भी जन्म में नहीं बिगड़ता, उसकी ऐसी हालत नहीं होती, हम ऐसा कहना चाहते हैं। पूर्वकर्म क्यों हुआ? अपना मूल कंट्रोल नहीं है तभी न। यानी हम कंट्रोल में मानते हैं। कंट्रोल मानने के लिए आपको उसके सभी नियम समझने चाहिए।

द्वेष के सामने प्रेम, अंत में शून्य शेष

बेटा अगर शराब पीकर, आकर आपको दु:ख देता है, और आप मुझसे कहो कि 'यह बेटा मेरे दु:ख का कारण है।' मैं कहूँगा कि 'गलती आपकी है।' इसलिए शांतिपूर्वक, चुपचाप भुगत लो। भाव बिगाड़े बिना। यह महावीर का नियम है और जगत् का नियम अलग है। जगत् में आपको मिलेंगे कि 'बेटे की भूल है' ऐसा कहनेवाले लोग और आप बहुत अकड़ जाओगे कि, 'अरे! बेटे की ही गलती है। यह मेरी समझ सही है' बड़े समझवाले! भगवान कहते हैं, 'तेरी गलती है।'

हम तो सिर पर हाथ फेरकर कहते हैं कि, 'भाई, यह नहीं होना चाहिए' प्रेम से कहते हैं, हमें उसके प्रति द्वेष नहीं होता और आपको उसके प्रति द्वेष रहता ही है कि, 'यह खराब है'। लेकिन उस उस द्वेष को निकाल कर करोगे तो काम होगा। द्वेष की उल्टी कर देनी चाहिए।

एक बार मन मुटाव हो गया, फिर उसकी लिंक शुरू हो जाती है। फिर मन में उसके लिए ग्रंथि बंध जाती है कि 'यह व्यक्ति ऐसा ही है।'

सामनेवाले को विश्वास में लेने जैसा है। कहते रहने से किसी का नहीं सुधरता। सुधरना तो, 'ज्ञानीपुरुष' की वाणी से सुधरता है। भगवान ने कहा है कि मरे हुए की तरह जीना है। बिगड़े हुए को सुधारना वह 'हमसे' हो सकता है, आपको नहीं करना चाहिए। आपको हमारी आज्ञा के अनुसार चलना चाहिए।

बच्चे ही हैं हमारा थर्मामीटर

बड़ा होने पर बेटा विरुद्ध चलने लगे तो समझ लेना चाहिए कि यह अपना 'थर्मामीटर' है। आपमें धर्म कितना परिणमित हुआ है, उसके लिए 'थर्मामीटर' कहाँ से लाएँ? घर में ही 'थर्मामीटर' मिल जाए, तो फिर बाहर खरीद ने नहीं जाना पड़ेगा!

बेटा अगर धौल लगाए, तब भी कषाय उत्पन्न नहीं हों, तो समझ लेना चाहिए कि अब हम मोक्ष में जाएँगे। दो-तीन धौल मारने पर भी अगर कषाय न हों तो समझ लेना चाहिए कि 'यह बेटा ही हमारा थर्मामीटर है।'

घर के लोग ही हमारे थर्मामीटर होते हैं। हमें कितना बुखार चढ़ा है, कितना उतर गया, तुरंत पता चल जाएगा। हमने उसे कुछ सलाह दी और थोड़ी सख्ती से कह दिया तो तुरंत वह कुछ ऐसा कहेगा कि हमें बुखार चढ़ा है या नहीं, उसका पता चल जाता है। घर बैठे थर्मामीटर।

सुधारने की काबिलीयत हो तो सुधारो

प्रश्नकर्ता : तो फिर बेटे को समझाएँ? उसे सुधारें या नहीं?

दादाश्री : अगर आप सुधारक होते, तो सुधर न गया होता! वह ऐसा कैसे से बन गया? सुधारक के बच्चे तो कितने समझदार होते हैं! आपमें काबिलीयत हो तो सुधारना, वर्ना सुधारने के बजाय और बिगड़ जाए ऐसा नहीं करना चाहिए। हम उसे सुधारना चाहें और वह राइफल लेकर हमारे पीछे दौड़ने लगे, ऐसा नहीं करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : बेटे को सुधारने के भाव करने चाहिए या नहीं? प्रयत्न करने चाहिए क्या?

दादाश्री : भाव करने चाहिए, माँ-बाप के भाव होते ही हैं, लेकिन तरीका नहीं जानते। बिना ज्ञान जाने क्या भाव करेंगे? प्रयत्न करने चाहिए, लेकिन वे प्रयत्न ऐसे नहीं होने चाहिए कि उसका नुकसान करे। उसे हेल्प हो ऐसे प्रयत्न करने चाहिए। वहाँ उस प्रयत्न में समता रखना बहुत कठिन है। वहाँ समता रखनी चाहिए।

सुधारने की काबिलीयत होनी चाहिए या नहीं होनी चाहिए? और जिनमें सुधारने की काबिलीयत हो, उनके बच्चे बिगड़ते ही नहीं। वह फलदायी होना चाहिए, वर्ना ज़्यादा बिगाड़ेगा।

माँ-बाप के मतभेद भटकाते हैं बच्चों को

माँ-बाप को बच्चों का ध्यान ही नहीं रहता कि ये बच्चे खड़े हैं और हम ये क्या कर रहे हैं? बेसुध होकर बोलते रहते हैं और झगड़ते हैं! फिर बच्चों में खराब संस्कार पड़ते हैं। ये उल्टे संस्कार न पड़ें उसके लिए क्या आपकी जोखिमदारी नहीं है, बच्चों के लिए? यानी यह झंझट कम कर देनी चाहिए। मतभेद क्यों करना? वह तो गलत अहंकार है, मेडनेस है कि 'मैं अक्लवाला हूँ और तू बेअक्ल है।' बस यही झंझट! बेअक्ल होती है क्या कोई? बच्चों के संस्कार भी फिर ऐसे ही हो जाते हैं। इसलिए वास्तव में माँ-बाप को कभी झगड़ना नहीं चाहिए, मतभेद नहीं पड़ना

चाहिए। मतभेद पड़ गया हो तो, सुलह कर लेनी चाहिए बच्चे देखेंगे कि 'ओहोहो! माँ-बाप कितनी अच्छी तरह से जी रहे हैं।'

सब से पहले तो घर में सब क्लिअर (शांत) करना चाहिए। घर में किसी को थोड़ी सी भी अशांति नहीं होनी चाहिए। हज़बेन्ड को वाइफ के साथ समाधानपूर्वक रहना चाहिए।

आपके बच्चे आपके साथ क्यों नहीं रहते? तब वे कहेंगे, 'आप तो आपस में झगड़ते हो।' वे प्रेम दिखाई ही नहीं देता। मन में ऐसा लगता है कि 'ऐसे मूर्ख फादर-मदर कहाँ से मिल गए।' वे बेचारे ऊब जाते हैं, उन्हें पूछने पर बाहर से तो आपका अच्छा ही कहेंगे कि 'मेरे फादर-मदर अच्छे हैं,' लेकिन अंदर क्या है? हम उसका रहस्य देखें तो बहुत आश्चर्य होगा। ये सारे बच्चे बाहर तो बहुत समझदारी से रहते हैं। 'मेरे फादर-मदर दोनों अच्छे हैं' कहेंगे, ऐसा नहीं कि 'मेरे फादर खराब हैं।' पक्के हैं सभी, लेकिन आपके लिए प्रेम नहीं है।

बच्चे की बहस, वह खुद का ही रिएक्शन

प्रश्नकर्ता : हम कुछ कहें तो बच्चे बहुत बहस करते हैं, आर्ग्युमेन्ट बहुत करते हैं। कहते हैं, 'आप लेक्चर क्यों दे रहे हैं।'

दादाश्री : बहस बहुत करने के बावजूद भी अगर प्रेम से सिखाएँगे न, तो बहस कम कर देंगे। यह बहस आपका रिएक्शन है। अब तक आपने उसे धमकाया है न। वह उसके दिमाग़ से जा नहीं रहा, मिटता नहीं है। इसलिए फिर इसी कारण से वह बहस करता है। मेरे साथ एक भी बच्चा बहस नहीं करता। क्योंकि मैं आप सभी के साथ सच्चे प्रेम से बातें करता हूँ।

प्रश्नकर्ता : बच्चे अगर गलती कर रहे हों तो उसे कैसे टोकना चाहिए?

दादाश्री : हमें उनसे पूछना चाहिए कि 'ये सब जो आप कर रहे हो वह आपको ठीक लगता है क्या? यह सब आपने सोचकर किया है?' तब अगर वह कहे कि 'मुझे ठीक नहीं लग रहा,' तो हमें कहना चाहिए कि 'भाई, तो बेकार में हम ऐसा क्यों करें?' ऐसे खुद ज़रा सोचकर कहो न! खुद न्यायाधीश हैं सभी, सभी समझते हैं। लेकिन अगर आप ऐसा कहो कि 'तू मूर्ख है, गधा है। तूने ऐसा क्यों किया?' तब बल्कि पकड़ पकड़ेगा। 'मैं जो करता हूँ वही सही है, जाओ' कहेगा। और उल्टा करेगा। फिर, घर कैसे चलाना चाहिए वह नहीं आता, जीवन कैसे जीना चाहिए वह नहीं आता। इसलिए इसमें जीवन जीने की सारी चाबियाँ दी गई हैं, कैसे जीवन जीना चाहिए, ऐसा!

प्रश्नकर्ता : दादा, मैंने तो उससे आगे का डायलोग भी सुना है कि, 'आपसे किसने कहा था कि हमें पैदा करो?' फिर तो जीने का अर्थ ही नहीं न!

दादाश्री : अर्थ ही नहीं। हमारी इज्जत क्या रही फिर? ऐसी दुनिया में रहने के बजाय तो वैराग्य लेना अच्छा है। प्रेमभरी दुनिया चाहिए। ऐसी दुनिया?

प्रेम के बिना परिणाम नहीं आएगा। अगर एक पौधे को बड़ा करना हो न, तब भी अगर आप प्रेम से करोगे तो बहुत अच्छा उगेगा। लेकिन अगर यों ही पानी डालो, हो हल्ला करोगे तो कुछ नहीं होगा। आप कहो कि 'अरे वाह! पौधा अच्छा उगा है' तो उसे अच्छा लगता है। वह भी बड़े-बड़े अच्छे फूल देगा। तो फिर इन मनुष्यों पर तो कितना असर होता होगा!

लड़ना ही पड़े तो लड़ो, लेकिन एकांत में

जिसके घर में क्लेश हो तो भगवान भी कहेंगे, 'अरे! इस घर में नहीं जाना है। चलो, और कहीं चलते हैं।' इसलिए फिर घर में किसी भी बात में बरकत नहीं आती।

इसलिए क्लेश नहीं करना चाहिए। और अगर क्लेश का या लड़ने का बहुत शौक हो, तो बच्चों के सो जाने के बाद दूसरे कमरे में जाकर लड़ना। ऐसा शौक हो तो उस समय पूरा करना, लेकिन बच्चों की गैरहाज़िरी में या फिर जब वे स्कूल गए हों तब लड़ने की शुरुआत करनी चाहिए। उनकी उपस्थिति में नहीं लड़ना चाहिए, संस्कारी रहना चाहिए। आप से भूल हो जाए तो भी पत्नी कहे, 'कोई बात नहीं।' और उनकी भूल हो तो आप कहो कि, 'कोई बात नहीं।' तभी बच्चे ऐसा देखेंगे तो ऑल राइट होते जाएँगे। फिर भी अगर आप लड़ना चाहते हो, तो बचाकर रखना। फिर बच्चे जब स्कूल चले जाएँ उसके बाद लड़ना, एक घंटे तक। लेकिन अगर बच्चों की उपस्थिति में झगड़े होंगे, तो वे देखते रहेंगे और फिर उनके मन में पापा या मम्मी के लिए अभी से गलत भावना शुरू हो जाएगी। उनका पॉज़िटिव छुटकर नेगेटिव शुरू हो ही जाएगा। यानी आजकल बच्चों को बिगाड़नेवाले माँ-बाप ही हैं। लड़ना हो तो एकांत में लड़ना लेकिन उनकी उपस्थिति में नहीं। एकांत में दरवाज़े बंद करके आमने-सामने दोनों डंडे लेकर लड़ना।

प्रश्नकर्ता : डंडे से लड़कर कर्म बाँधने के बजाय तो फाइल बंद करना बेहतर है न?

दादाश्री : उसके जैसा उत्तम कुछ भी नहीं है, लेकिन जिसे इसका शौक है उसे! लेकिन तू कहे और वे मान जाएँ ऐसे नहीं हैं। ये तो मार खाएँगे तब मानेंगे। अनुभव होगा न! अनुभव हुए बिना आपके समझाने से नहीं मानेंगे।

बाप 'बाप' बनने जाता है, वहाँ है प्रोब्लम

प्रश्नकर्ता : बच्चे माँ-बाप के साथ सुबह एक घंटा और रात में दो घंटे रहते हैं। इस तरह दिन में तीन घंटे माँ-बाप के साथ बिताते हैं और आठ घंटे बाहर स्कूल में रहते हैं। उनकी ज़्यादातर ज़िंदगी स्कूल में या घर से बाहर बितती है। बाहर के लोगों के संग ज़्यादा रहते हैं। इसकी वजह से ज़्यादा तकलीफ होती है। हम भले ही चाहे कुछ भी समझाएँ, सिखाएँ?

दादाश्री : ऐसा है न, अगर बच्चों के प्रति आपका प्रेम रहेगा न, तो बाहर से फुरसत मिलते ही वापस घर आ जाएँगे। स्कूल से फुरसत मिलते ही तुरंत घर आ जाएगा। उसे घर के बिना अच्छा नहीं लगेगा।

प्रश्नकर्ता : बच्चों की दृष्टि हमारे प्रति गलत हो गई हो, राग-द्वेषवाली हो गई हो, हमारे लिए अभाव हो, तब हमें क्या करना चाहिए?

दादाश्री : ऐसा है न, बच्चों को अभाव नहीं है। यह तो ऐसा है कि बाप 'बाप' बनने जाता है और माँ 'माँ' बनने जाती है। यह बच्चा जानता है कि बाप में फिटनेस (योग्यता) तो है नहीं और मेरा बाप बन बैठा है! इसलिए बच्चे बाप से गुस्ताखी करते हैं। आजकल सब ऐसा ही हो गया है। वैसे इन बच्चों में भी 'फिटनेस' नहीं है लेकिन यह जो पढ़ाई (शिक्षा) है न, वह उसे ऐसा दिखाती है कि मेरे बाप की ही गलतियाँ हैं। और बाप में भी कमियाँ तो होती हैं।

घर में 'आप बड़े हैं' सुनाई देता है, वही आपकी गलती हैं'। 'आप बड़े हैं' ऐसा सुनो ही

मत। वे कहें तो उसमें हर्ज नहीं है लेकिन आप उसे सुनो ही नहीं अगर आपको रोग लग जाता हो तो आप उसे मत सुनो और अगर रोग नहीं लगता तो आराम से सुनो। अगर वे शब्द रोग करवानेवाले हैं तो आप मत सुनो। वर्ना फिर 'आप बड़े, मैं छोटा' ऐसा सब प्लस-माइनस कर दो। तो फिर बोझ बढ़ेगा नहीं और सभी को आनंद रहेगा।

स्वीकार कर लो प्लस-माइनस का सिस्टम

प्रश्नकर्ता : तो बाप बनने के लिए बाप को क्या करना चाहिए?

दादाश्री : एक उदाहरण देता हूँ, आपको हेल्प हो, आपको एडजस्ट हो जाए उसके लिए। हमारे दूर के भतीजे का बेटा था और खास करके मुझ से दो-तीन साल छोटा। भतीजे का बेटा था इसलिए मुझे 'दादा' कहता था। यानी मैं जब भी वहाँ जाता तो वह सामने से ही दादा के प्रेम में बातें करता रहता था। दादा कब आएँ, दादा ऐसा है, वैसा है, मानो खुद के ही दादा हों, वैसा। इसलिए फिर मेरा बोझ बढ़ने लगा कि बार-बार 'दादा-दादा' करता है। तो मुझ पर बोझ बढ़ने लगा। मुझे उपकार महसूस हुआ कि, 'अरेरे! दादा बन गए लेकिन इसका कोई काम तो नहीं किया है हमने।' तो फिर बोझ बढ़ेगा या नहीं बढ़ेगा?

प्रश्नकर्ता : बढ़ेगा।

दादाश्री : पूरे दिन अगर बेटा, 'पिताजी, पिताजी' करता रहे न, तो उस समय अपना बोझ बढ़ जाता है। इसलिए फिर मैंने सोचा कि यह तो बोझ बन जाएगा, तो अब क्या करूँ? यह तो दिनोंदिन सिर पर बोझ बढ़ता जाएगा। वह तो 'दादा, दादा' कहता ही रहेगा, तो यह बोझ उतारा कैसे जाए? ऐसा होता है या नहीं होता? फिर अपनी आँख में नरमी आ जाती है, तो हम सत्य बोलने से भी डरते हैं। इस प्रश्न ने मुझे परेशान कर दिया था, 18-20 साल की उम्र में। क्योंकि मैं बहुत लोगों का दादा लगता था। इसलिए लोग 'दादा, दादा' करते थे। कितने लोग 'दादा, दादा' करते थे लेकिन औपचारिक व्यवहार रखते तो मेरा बोझ नहीं बढ़ता था। लेकिन यह तो मानो खुद के दादा हों उतने प्रेम से बोलता था, 'इसलिए मेरा बोझ बढ़ने लगा।' फिर मैंने सोचा, मैंने कहा, 'अब यह बोझ कैसे उतरेगा?' अगर उससे ऐसा कहें कि 'तू मुझे दादा मत कहना' तो वह भी गलत है। व्यवहार में आपको 'दादा' न कहूँ तो मैं क्या कहूँ? यानी ऐसे भी उलझन और वैसे भी उलझन खड़ी हो गई।

फिर मैंने खोज निकाला कि जब वह मुझे 'दादा' कहता तब मैं मन में उसे 'दादा' कहता यानी प्लस-माइनस करता रहता था, शून्य कर देता था। इसलिए मेरे मन को बहुत अच्छा लगने लगा, हल्का होने लगा। त्यों-त्यों उसे अट्रैक्शन (आकर्षण) बढ़ने लगा।

मैं उसे मन से 'दादा' मान लूँ तो फिर उसके मन तक मेरी बात पहुँचेगी न! 'अरे वाह! उन्हें मुझ पर कितना भाव है।' यह बहुत समझने जैसी बात है। ऐसी छोटी सी बात कभी यों निकल जाती है, तो कह देता हूँ। अगर आपको ऐसा सेट करना आ गया तो कल्याण हो जाएगा। उसके मन में ऐसा ही लगेगा कि दादा जैसे तो कोई व्यक्ति नहीं मिलेंगे। यह प्लस-माइनस समझ में आया? समझ में नहीं आया, है न? यह प्लस-माइनस का सिस्टम, अगर आपको आ जाए तो स्वीकार कर लेना। मेरे पास यह व्यवहारिक ज्ञान जानने के लिए बहुत समय रहता है तो लाभ ले लेना।

भय से डरते हैं बच्चे

प्रश्नकर्ता : बच्चों के साथ बच्चे बन जाना और उस तरह से बरताव करना हो तो वह कैसे?

दादाश्री : फिलहाल बच्चों के साथ बच्चों जैसा बरताव रखते हो? हमारे बड़ेपन का उसे भय लगता रहता है। हमें इस तरह से बरताव करना चाहिए कि उसे भय नहीं लगे। समझाकर उसका दोष दूर करना चाहिए, डराकर नहीं। वर्ना डराना काम नहीं आएगा। उम्र में आप बड़े वे छोटे, तो डर जाते हैं बेचारे! लेकिन उससे दोष दूर नहीं होता, दोष तो बढ़ता रहता है अंदर। लेकिन अगर समझाकर दोष दूर करेंगे तो दोष जाएगा, वर्ना नहीं जाएगा। आप डराकर ही सिखाते हो। डर से ही बड़ा होगा, फिर कल्याण कर देगा। किसी भी प्रकार से उसे हमारा भय नहीं लगना चाहिए। हमें प्रेम स्वरूप बनना चाहिए।

धाक से नहीं, बातचीत से होता है मन खुला

प्रश्नकर्ता : अपने यहाँ कहते हैं न कि माँ-बाप को बच्चे पर धाक रखनी चाहिए, तो इसमें दादा का क्या मानना है?

दादाश्री : हाँ। धाक तो सिर्फ आँख की ही होनी चाहिए, हाथ की नहीं। और रोज़ जो प्रेम देते हो न, उसे बंद कर दिया जाए तो अपने आप समझ जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : वैसी धाक आप महात्माओं पर रखते हो न?

दादाश्री : हाँ, रखता हूँ। ऐसा ज़रा सा नहीं रखेंगे न, तो उन्हें पता कैसे चलेगा? दंड मिला था ऐसा। यानी जागृत रखने के लिए ऐसा करना चाहिए।

जहाँ धाक महसूस होती हो वहाँ नहीं बोल पाते। इसी वजह से बच्चे माँ-बाप से अपनी सारी हकीकत, वास्तविकता नहीं बताते। डर जाते हैं कि फिर कुछ कहेंगे। इसलिए फिर इसमें उलझन खड़ी हो जाती है। इसलिए मैं माँ-बाप से क्या कहता हूँ कि उसके साथ बैठकर बातचीत करो। उसे क्या परेशानी हैं। उसे क्या विचार आते हैं! जो भी आते हैं वे देख लो। वर्ना फिर भी अगर बारूद भरा होगा तो बम फूटेगा ही। इसलिए अगर पहले से जान लिया तो नहीं फटेगा या फिर देर से फटे ऐसा उपाय कर पाएँगे न? यों भी बम फूटे बगैर रहता है क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं रहता।

दादाश्री : इसलिए हम सभी फादर-मदर से कहते हैं कि विचार-विमर्श कीजिए। बारह-तेरह वर्ष की उम्र के बाद से साथ में बैठो, बातचीत करो। उसका मन खुला करो। अगर उसके मन में उलझन हो, तो उसकी उलझन कौन सुलझाएगा?

धाक से, मारने से जगत् नहीं सुधरता। डाँटने से या चिढ़ने से जगत् नहीं सुधरता। ऐसे कोई नहीं सुधरता, कर दिखाने से सुधरता है। जितना कहा उतना पागलपन है।

समता व करुणा से सुलझती है गुत्थी

एक सज्जन थे। वे क्या कुछ करके रात के दो बजे तक घर पहुँचते थे, उसका वर्णन करने जैसा नहीं है। आप समझ जाओ। इसलिए फिर घर के सभी लोगों ने तय किया कि उन्हें डाँटें या घर के अंदर नहीं आने दें, कौन सा उपाय करें? और उसका अनुभव कर लिया। कहने गए, तो वे कहने लगे कि 'आपको मारे बगैर छोड़ूँगा नहीं।' फिर घर के सभी लोग मुझसे पूछने आए कि 'इनका क्या करें?' ये तो ऐसा कहते हैं' तब मैंने घर के लोगों से कहा कि, ''कोई उसे एक

शब्द भी मत कहना। आप कहोगे तो वह और भी गुस्ताख हो जाएगा और घर में नहीं आने देंगे तो वह डकैती करेगा। वह जब आना चाहे तब आए और जब जाना चाहे तब जाए। हमें राइट भी नहीं बोलना है और रोंग भी नहीं बोलना है। ना ही राग रखना है और ना ही द्वेष रखना है। समता रखनी है, करुणा रखनी है।'' तो तीन चार सालों बाद वह भाई अच्छा हो गया। आज वह भाई व्यापार में बहुत मदद करता है! ऐसा नहीं है कि दुनिया काम की नहीं है लेकिन काम लेना आना चाहिए? सभी भगवान हैं और हर एक अलग-अलग काम लेकर बैठा है। इसीलिए नापसंद मत करना।

यानी इन सभी व्यवहारिक प्रश्नों को हम हल कर देते हैं इसलिए इतना सही जीवन जी सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : वास्तविक व्यवहार तो ज्ञानी से जानने मिलता है।

दादाश्री : हाँ, यह व्यवहार बहुत समझने जैसा है। व्यवहार यानी क्या? सामनेवाले को बाधक न बने, सामनेवाले को आनंद रहे, हमें आनंद रहे, उसे व्यवहार कहते हैं।

फ्रेन्डशिप से सुधरते हैं बच्चे

प्रश्नकर्ता : माँ-बाप और बच्चों के बीच कैसा रिलेशन होना चाहिए। उन लोगों की लाइफ में हमें कहाँ तक इन्टरफियर (हस्तक्षेप) करना चाहिए? किस उम्र तक और कैसे?

दादाश्री : बच्चे 5 साल के हो जाएँ, तब तक कहने की छूट है। 10-11 साल तक हम फ्रेन्डशिप नहीं रख सकते। तब तक उससे भूल चूक हो सकती है इसलिए उसे समझाना चाहिए। 10-11 साल तक एकाध धौल भी मारनी पड़ सकती है।

16 साल के बाद तो उसे फ्रेन्ड जैसा मानना चाहिए। माँ-बाप का हक़ छोड़ देना पड़ेगा। और फिर फ्रेन्ड की तरह रहना चाहिए। लेकिन 20 साल का जवान होने के बाद उसे कुछ भी नहीं कह सकते, एक अक्षर भी नहीं कह सकते, कुछ कहना गुनाह कहलाएगा। बच्चों का अहंकार जागने के बाद, उन्हें कुछ नहीं कहा जा सकता और आप क्यों कहोगे? ठोकर लगेगी तो सीखेंगे।

प्रश्नकर्ता : 16 साल के बाद अगर बच्चा कुछ खराब काम करता है, जिससे उसे हार्म (नुकसान) होनेवाला हो, तो क्या हमें उसे रोकना चाहिए?

दादाश्री : फ्रेन्ड यानी फ्रेन्ड, फ्रेन्ड की तरह रोकते हो तो परेशानी नहीं होगी। फादर बनकर कहोगे तो थोड़ी दिक्कत होगी।

प्रश्नकर्ता : फ्रेन्ड की तरह रोकने की कोशिश करने के बाद भी अगर और न माने तो उसे गलत करने देना चाहिए?

दादाश्री : तो फिर उसे करने देना। ऐसा तो चलता ही रहेगा। वर्ना हम अगर उसे मारेंगे तो गुस्ताखी करेगा या फिर कार्य गुप्त रखेगा, छिपाएगा। फ्रेन्ड की तरह उसे समझाना चाहिए कि 'इससे क्या फायदा, इससे जेल हो सकती है, ऐसा सब होगा।' फ्रेन्ड की तरह यों समझाना चाहिए, फादर-मदर की तरह नहीं। फादर-मदर का फोर्स रहता है। वैसा फोर्स नहीं होना चाहिए। बच्चा मना करे तो हमें कहना बंद कर देना है। जब तक कुछ कहते नहीं तभी तक वह फ्रेन्ड की तरह रहता है।

आप अगर फ्रेन्डशिप करोगे तो बच्चे सुधरेंगे। बाकी फादर-मदर की तरह रहोगे, रौब जमाओगे, तो वह सब जोखिम है। फ्रेन्ड

की तरह रहना चाहिए वह बाहर फ्रेन्ड ढूँढे ही नहीं, उस तरह से रहना चाहिए। फ्रेन्ड की तरह उसके साथ (कभी-कभी) ताश खेलना चाहिए, उसके साथ ऐसा सब करना चाहिए। 'तेरे आने के बाद हम चाय पीएँगे,' ऐसे कहना चाहिए। 'हम सब साथ में चाय पीएँगे।' 'योर फ्रेन्ड' की तरह बरताव करना चाहिए, तो वे बच्चे आपके रहेंगे। पहले आप फ्रेन्ड की तरह रहने का तय करेंगे तो रह पाएँगे जैसे कि आप ऐसा कुछ नहीं कहते, जिससे फ्रेन्ड को गुस्सा आ जाए वैसा। अगर वह गलती कर रहा हो तो हम फ्रेन्ड को कितना समझाते हैं? जब तक वह मान न जाए। न माने तो फिर हम कहते हैं, तेरी मरज़ी।

बच्चों को घर में ही मान दो

बहुत से बच्चों को मान चाहिए। मान का स्वाद आता है न! इसलिए ऐसे बच्चों के लिए माँ-बाप को क्या करना चाहिए? इस तरह से रखना चाहिए कि बाहर मान न ढूँढे। वे मान के भूखे न रहें, बाहर मान खाने न जाएँ मान की होटलों में, उसके लिए क्या करना चाहिए? घर आए तब ऐसी बात करनी चाहिए कि 'बेटा तू तो समझदार है, ऐसा है, वैसा है' उसे थोड़ा मान देना है। यानी फ्रेन्डशिप जैसा रखना चाहिए। उसके सिर पर हाथ फिराकर कहना कि 'बेटा चलो खाना खाने बैठते हैं, साथ में नाश्ता करते हैं।' ऐसा सब करना चाहिए, तो फिर बाहर प्रेम नहीं खोजेगा। हम तो 5 साल के बच्चे से भी प्रेम करते हैं, उसके साथ फ्रेन्डशिप जैसा रखते हैं।

फ्रेन्ड बनने के लिए माँ-बाप को अपनानी है यह कला

फ्रेन्ड बनने के लिए सब से पहले हमें क्या करना पड़ेगा? बाह्य व्यवहार में 'मैं' उसका फादर हूँ लेकिन अंदर मन में हमें समझना है कि 'मैं उसका बेटा हूँ।' तब फ्रेन्डशिप होगी, वर्ना नहीं होगी। फादर फ्रेन्ड कैसे बन सकता है? तब कहे, 'लेवल पर आएगा तब।' लेवल पर कैसे आएगा? वह मन में ऐसा माने कि 'मैं इसका बेटा हूँ।' ऐसा कहे तो काम बन जाएगा। कितने ही लोग कहते हैं और काम बन भी जाता है।

प्रश्नकर्ता : वह देखा है। औरंगाबाद में सभी बच्चों को इकट्ठा करके आप बातें करते थे।

समझदारी की काउन्टरपुली

प्रश्नकर्ता : बड़े बेटे के साथ मेरी बहुत खटपट होती है। इच्छा न होने के बावजूद भी कुछ न कुछ कहा-सुनी हो जाती है, तो क्या करूँ?

दादाश्री : हाँ, इसलिए मैं यह उदाहरण दे रहा हूँ कि अगर आपका बेटा 12 साल का है, और आप उसे सारी बातें करते हो, तो सब बातों में कितनी ही बातें वह समझ सकेगा और कितनी ही बातें वह नहीं समझ सकेगा। आप क्या कहना चाहते हैं वह उसकी समझ में नहीं आता। आपका व्यू पोइन्ट क्या है, उसकी समझ में नहीं आता। इसलिए आपको धीरे से कहना है कि 'मेरा हेतु ऐसा है। मेरा व्यू पोइन्ट ऐसा है। मैं ऐसा कहना चाहता हूँ। तेरी समझ में आया या नहीं आया? मुझे बताना। अगर तेरी बात मेरी समझ में नहीं आएगी तो मैं समझने का प्रयत्न करूँगा,' अर्थात् हमें उसके साथ स्पष्ट कर लेना चाहिए, और कैसे? फ्रेन्डली टोन में होना चाहिए।

तू सामनेवाले की दृष्टि ढूँढ निकाल। सामनेवाले की दृष्टि यानी क्या कि हर एक से एडजस्ट हो जाना, ऐसी दृष्टि से देखो।

काउन्टरपुली रखकर होना है एडजस्ट

मानसिक उम्र देखकर हमें एडजस्ट करना चाहिए। हम जब किसी के भी साथ बात करते हैं, तब यह देखकर उसे समझाते हैं कि उसकी मानसिक उम्र कितनी है? इसलिए हम कहते हैं कि हम काउन्टपुली रख देते हैं। इसलिए हमारा टकराव नहीं होता, मतभेद नहीं होता। उसका मानसिक ग्रैडेशन (सोपान श्रेणी) वाचिक ग्रैडेशन, शरीर का ग्रैडेशन कैसा है, सबकुछ देख लेते हैं। शरीर से उम्र में बड़ा है, वाणी से बहुत तेज़ हैं, शूरवीर है, लेकिन मानसिक सब 'लो' है तो रेवोल्यूशन कम कर देने चाहिए। बच्चे जैसा ही मान लेना है।

समझाकर काम लो

कई लोग बच्चे से कहते हैं, 'तू मेरा कहा नहीं मानता।' मैंने कहा, 'आपकी वाणी उसे पसंद नहीं है। अगर पसंद आए तो असर होगा ही।' अरे, भाई, तुझे पापा बनना नहीं आया। इस कलियुग में हालत तो देखो लोगों की! वर्ना तो सत्युग में कैसे फादर और मदर थे!

समझाकर काम लेना नहीं आता इसीलिए मुझे लिखना पड़ा है कि, 'अन्सर्टिफाइड फादर एन्ड अन्सर्टिफाइड मदर।' देखो न पुस्तक में ऐसा लिखना पड़ा है। क्योंकि वे समझा नहीं पाते और फिर चिल्लाते हैं।

मैं यह सिखाना चाहता हूँ कि आप इस तरह से कहो कि बच्चे को आपकी बात में इन्टरेस्ट आए। तब फिर वह आपका कहा करेगा ही। आपने मुझसे कहा न कि 'आपकी बात मुझे पसंद है,' तभी तो आप से उतना हो पाता है।

बच्चों को बहुत समझाना पड़ता है, उसका कारण क्या है? कि आप खुद नहीं समझते हैं, इसलिए ज़्यादा समझाना पड़ता है। समझदार इंसान को एक बार समझाना पड़ता है तो क्या हमें नहीं समझ जाना चाहिए? बहुत समझाते हो, लेकिन बाद में तो समझ जाते हैं न!

इसलिए हमें बार-बार अलग-अलग तरीके से समझाना चाहिए। समझ में आना चाहिए न उसे? फिर भी अगर समझ में न आए, तो समझ लेना कि यह अपनी भूल है। अगर हिटलरीज़म करेंगे तो हेल्प फुल नहीं होगा।

हम समझाएँ और अगर उसकी समझ में आ जाए, तो वह हमेशा एक्सेप्ट करेगा ही।

प्रश्नकर्ता : मानते हैं लेकिन बहुत समझाने के बाद।

दादाश्री : वह रास्ता सब से अच्छा है। यह तो मार-पीटकर समझाना चाहते हैं। बाप बन गया तो समझता है जैसे दुनिया में अभी तक कभी कोई बाप बना ही नहीं होगा! अत: जो समझाकर काम लेते हैं, उन्हें मुझे अन्क्वालिफाइड नहीं कहना है।

डिसिप्लिन लाने के लिए ज़रूरत है खुद के डिसिप्लिन की

प्रश्नकर्ता : तो फिर बच्चों को डिसिप्लिन में लाने के लिए हमें क्या करना चाहिए, माँ-बाप को?

दादाश्री : उन्हें डिसिप्लिन में लाने के लिए आपको डिसिप्लिन्ड होना चाहिए। देखो मैं डिसिप्लिन्ड हो गया हूँ, वह आप सभी को दिखाई देता है या नहीं? देखो, मुझ में कोई व्यसन नहीं है। यहाँ पर नो सीक्रिसी, तो आप सभी कितने समझदार हो गए हो। अगर पहले बच्चों को समझदार बनाओ और फिर उसके बाद आप समझदार बनो तो ऐसा नहीं चलेगा। बच्चे

तो आपका देखकर सीखते हैं। वे खुद की ग्रंथियाँ लेकर आए हैं, लेकिन उससे आगे वे बाहर का देखकर ही तैयार होते हैं। बाहर का अच्छा दिखाई दे और खुद के पास गलत समझ हो, तो मन में ऐसा लगता है कि 'ऐसा क्यों?' 'मुझ में गलती है,' ऐसा समझ जाते हैं।

हमें सारा असंयम बंद कर देना चाहिए। तो फिर हमारे जैसे संस्कार देखेगा, वैसा ही वह करेगा। पहले के समय में हमारे माँ-बाप संस्कारी क्यों कहे जाते थे? वे बहुत नियमवाले थे और तब बहुत संयम था।

हमारा देख-देखकर बच्चे सीखेंगे

हमारा जीवन ही ऐसा लगना चाहिए कि बच्चे को आश्चर्य हो कि 'मेरी मदर जैसी मदर किसी की भी नहीं है।' हमें अपना जीवन ऐसे जीना चाहिए कि उसे सिखाना न पड़े, अपने आप देखकर वह सीख जाए।

हमारा देख-देखकर सीखना है। अपने पास बिठाकर क्यों रखता हूँ कि हमारा जीवन देखो, आँखें देखो। आँखों में क्या दिखाई देता है? स्वार्थ दिखाई देता है? 'नहीं, स्वार्थ नहीं दिखाई देता अंदर।' तब क्या दिखाई देता है? तो कहते हैं, 'वीतरागता दिखाई देती है।' ऐसा सीखो। दिल को ठंडक हो वैसी वाणी होती है। इसलिए ऐसा सब साथ में बैठते, रहने से हो जाएगा। इसलिए बेकार की चिंता नहीं करनी है। पढ़ाई से नहीं होगा। बल्कि लोग क्या कहते हैं, 'आप करके दिखाइए।' एक बार हम उससे कहें कि, 'लो, टेबल पर बैठकर यों खाना खाना।' तो एक बार सिखाने से खाना सीख जाता है। हमें वापस सिखाना नहीं पड़ता और किताब में ऐसे प्लानिंग करके सिखाया जाए तो कब सीख पाएगा?

अभी ज़बरदस्त दुषमकाल फैला हुआ है, संस्कार मात्र खत्म हो गए हैं। व्यक्ति किसी को समझा नहीं पाता। बाप बेटे से अगर कुछ कहे तो बेटा कहेगा कि, 'मुझे आपकी सलाह नहीं सुननी है।' तो फिर सलाह देनेवाला कैसा और लेनेवाला कैसा होगा? किस प्रकार के लोग इकट्ठे हो गए हो? ये लोग आपकी बात क्यों नहीं सुनते? सही नहीं है, इसलिए। यदि सही होगी तो सुनेंगे या नहीं? ये लोग ऐसा क्यों कहते हैं? आसक्ति की वजह से कहते हैं। इस आसक्ति की वजह से खुद अपना जन्म बिगाड़ते हैं।

बिन माँगी सलाह नहीं देनी चाहिए

'बिनमाँगी सलाह नहीं देनी चाहिए।' ऐसा हमने लिखा है। क्या? अगर कोई हमसे पूछे तो हमें सलाह देनी चाहिए और उस घड़ी जो अच्छा लगे, वह कह दें और सलाह देने के बाद हमें ऐसा कहना चाहिए कि 'आपको जैसा अनुकूल हो वैसा करना। हमने तो आपसे कह दिया।' तो फिर उसे बुरा नहीं लगेगा। हमें जो यह सब करना है न, तो उसके पीछे विनय रखना है।

ड्यूटी बाउन्ड फर्ज़ अदा करो

माँ-बाप ने अगर 5 हज़ार का कर्ज लेकर बेटे को पढ़ाया है, तब भी अगर कभी बेटा उद्धत हो जाए, तो ऐसा नहीं कहना चाहिए कि 'हमने तुझे पढ़ाया।' वह तो हम 'ड्यूटी बाउन्ड' थे, अनिवार्य था, वह किया। अनिवार्य अर्थात् 'ड्यूटी बाउन्ड' और अपनी मरज़ी का अर्थात् 'विल-बाउन्ड।' लोग अनिवार्य को मरज़ी का मानते हैं। अरे, जिस तरफ तेरी विलिंगनेस है, उसी तरफ का संसार बन रहा है। जो अनिवार्य है उसमें मरज़ी का चित्रण कर रहे हैं। जिसे बदल सकते हैं वह विल-बाउन्ड है। कितने ही बच्चे बाप के सामने गुस्ताखी करते

हैं तब बाप गुस्सा हो जाता है और कह देता है कि, 'मैंने तुझे पढ़ाया-लिखाया, बड़ा किया।' पूरा जगत् इनाम चाहता है कि 'मैंने इतना, इतना किया, तुम्हें भान नहीं है। तुम्हें कद्र नहीं है मेरी।' अरे भाई, किस बात की कद्र माँग रहा है? यह तो जो कुछ किया, वह तो तूने अनिवार्यता से किया।

हमने बैंकों से जो ओवर ड्राफ्ट लिए हैं, वे तो पूरे चुकाना ही पड़ेंगे न। जब हम रुपये लेते हैं तभी प्रोमिस देते हैं न कि, 'भाई, मेरी चाहे जो भी हालत हो, मोक्ष का अधिकारी बन जाऊँगा तो भी देकर जाऊँगा या फिर मोक्ष का अधिकारी न भी बन पाया तो भी आपका पेमेन्ट पूरा दे दूँगा।' ऐसा प्रोमिस देकर आए हैं न हम! उसी तरह व्यवहार में ये सारे प्रोमिस पूरे करने हैं और फिर यह अनिवार्य है। इच्छापूर्वक का आप कुछ करते ही नहीं हो। अनिवार्य, बिल्कुल 'ड्यूटी बाउन्ड।'

समभाव से *निकाल* करो इन फाइलों का। तभी इज्जत रहेगी, वर्ना इज्जत नहीं रहेगी। यानी फादर को ऐसा अहंकार नहीं करना चाहिए कि 'मैंने तुझे पढ़ाया।' अगर हम उन्हें संस्कारी बनाना चाहते हैं तो हमें अपना फर्ज़ नहीं चूकना चाहिए।

बच्चों को संस्कार देने के लिए खुद संस्कारी बनना चाहिए

किसी जन्म में, किसी काल में ज्ञानीपुरुष ने ऐसा चाबुक नहीं मारा होगा कि अन्क्वालिफाइड फादर्स एन्ड अन्क्वालिफाइड मदर्स। यानी क्वालिफिकेशन नहीं लेना है लेकिन बाप बनने की सामान्य बुद्धि होनी चाहिए या नहीं होनी चाहिए? बच्चों को संभालना नहीं आता। हाँ, अन्य किसी लोक में नहीं संभालना पड़ता। देवलोक में या अन्य किसी लोक में या जानवरों के बच्चों को, किसी को संभालना नहीं पड़ता। वे सहज रूप से ही संभले हुए ही होते हैं जबकि इन्हें तो संभालना पड़ता है। संभालने के लिए खुद संभला हुआ होना चाहिए। जोखिमदारी है यह तो सारी। 'अन्क्वालिफाइड फादर्स' कहना, यह क्या ऐसी-वैसी बात है? इस दुनिया में कोई भी रोग ऐसा नहीं है कि जिसकी दवाई न हो, डॉक्टर भी कहते हैं यह कैसा हो गया है, वह... कष्ट साध्य?

प्रश्नकर्ता : क्रोनिक हो गया है।

दादाश्री : डॉक्टर कहते हैं 'क्रोनिक' लेकिन क्रोनिक की भी दवाई है। सिर्फ उसके पुण्य की कमी है इसलिए दवाई नहीं मिल रही। बाकी, यों ही किसी पुरुष का हाथ लग जाए न तो भी सब मिट जाता है। अथवा चुटकीभर दवाई देने से भी मिट जाता है। सभी चीजें हैं जगत् में। कुछ है नहीं, ऐसा नहीं है।

ज़रूरत पड़े तो डाँटकर भी समझाते हैं ज़िम्मेदारी

प्रश्नकर्ता : दादा, आज मुझे ऐसा लग रहा है कि आप मुझे डाँट रहे हैं।

दादाश्री : हाँ, लेकिन अगर डाँटेंगे नहीं तो यह दुनिया सीधी कैसे होगी? ज़िम्मेदारी समझनी चाहिए न? फादर कैसे बनना यह समझे बिना तू फादर बन गया, यों ही कुछ भी जवाब लिख दिया लेकिन लोग इस जवाब को एक्सेप्ट नहीं करेंगे। फादर बनने की ज़िम्मेदारी नहीं समझनी पड़ेगी क्या? खुद बच्चे का बाप बन गया पर संस्कार देना नहीं आता। किसी को संस्कार देने जाना पड़े तो क्या वह अच्छा लगता है? हम से सब पूछ लेना। मैं तुम्हें बताऊँ उस अनुसार उसे संस्कार देना। जीवन जीने की कला सीखनी चाहिए। क्या ऐसा लिखना अच्छा लगता है, इन्डियन के

लिए? ऐसा लिखना चाहिए या नहीं? अरे, कोई लिखेगा ही नहीं न। उसका क्या कारण है? वही कि खुद अनक्वालिफाइड फादर है तो फिर कैसे लिखेगा? इसलिए कोई नहीं लिखता।

माँ-बाप के पागलपन की वजह से बच्चे भी पागल

माँ-बाप का पागलपन देखकर बच्चे भी पगला गए हैं। क्योंकि माँ-बाप के आचार-विचार सही नहीं हैं। पति-पत्नी भी, जब बच्चे बैठे हों तब उनके सामने छेड़खानी करते हैं तो फिर बच्चे बिगड़ेंगे नहीं तो और क्या होगा? बच्चों में कैसे संस्कार पड़ेंगे? मर्यादा तो रखनी चाहिए न? अंगारों का कैसा प्रभाव पड़ता है? छोटा बच्चा भी अंगारों की मर्यादा रखता है न? माँ-बाप के मन फ्रेक्चर हो गए हैं, मन व्याकुल हो गए हैं। चाहे कैसी भी वाणी बोलते हैं, सामनेवाले के लिए दुःखदायी हो जाए, ऐसी वाणी बोलते हैं। इसलिए बच्चे खराब हो जाते हैं, आप ऐसा कह देती हो कि पति को दुःख हो जाता है और पति ऐसा कह देता है कि आपको दुःख हो जाए।

प्रश्नकर्ता : अब, उसमें संस्कार की परतें कम होने लगी हैं। उसी वजह से यह सारी परेशानी है।

दादाश्री : नहीं, नहीं संस्कार खत्म ही होने लगे हैं। उसमें फिर दादा मिल गए इसलिए वापस मूल संस्कार में ले आएँगे। सत्युग में जैसे थे वैसे संस्कार फिर। इस हिंदुस्तान के एक ही बच्चे में इतनी शक्ति है कि पूरे विश्व का वज़न उठा सके। सिर्फ उसे पोषण देने की ज़रूरत है। ये तो भक्षक निकले! भक्षक यानी अपने सुख के लिए दूसरे को हर तरह से लूट लेते हैं। जो अपना सुख त्याग कर बैठा है, वह दूसरे को सर्वस्व सुख दे सकता है!

आज का युवा वर्ग है निखालस

प्रश्नकर्ता : आज का युवा वर्ग किस राह पर चल रहा है? आपश्री की दृष्टि से उसका भविष्य क्या है? सही राह कौन सी है?

दादाश्री : आज का युवा वर्ग आजकल किसी भी प्रकार का मार्गदर्शन न होने की वजह से सफोकेशन (परेशानी) में है। लेकिन ऐसा युवा वर्ग किसी काल में नहीं था। यह युवा वर्ग साफ है, प्योर है। उसे मार्गदर्शन देनेवाले की ज़रूरत है। अगर मार्गदर्शन दिया जाए तो यह हिंदुस्तान ऑल राइट (ठीक) हो जाएगा और मार्गदर्शन देनेवाला मिल जाएगा अब थोड़े ही समय में।

एक लड़का था, वह मुझ से कहने लगा कि, 'दादाजी, मुझे अंदर बहुत दुःख होता है।' मैंने कहा, 'तुझे दुःख क्यों होता है।' तब कहने लगा, 'मुझे एक खराब विचार आता है इसलिए मुझे दुःख होता है। ऐसे विचार क्यों आते हैं?' तब मैंने कहा, लेकिन कैसे विचार आते हैं, मुझे बता न। मैं वैसे विचार बंद करवा दूँगा।' तब कहने लगा, 'मुझे ऐसे विचार आते हैं कि दादाजी को गोली मार दूँ।' मैंने कहा, 'हाँ, वह ठीक है। अब तुझे दुःख हो, ऐसी बात है यह, है ना?' लेकिन किस वजह से ऐसा हुआ, वह मुझे बता। तब कहने लगा, 'जब आप विधि करवा रहे थे उस समय बाहर से कुछ लोग आए, उन्हें जल्दी से बुला लिया और मुझे वहाँ दस मिनट तक रोककर रखा। इसलिए मन में मुझे ऐसा लगा कि इन दादा पर गोलीबार करो।' मैंने कहा, 'ठीक है, मेरी गलती है वह भी ठीक है। मुझ से यह गलती हो गई, इसलिए तुझे ऐसा विचार आया। (लेकिन) अब नहीं आएगा।' औरों को आने दिया, उसे नहीं आने दिया, फिर तो आएँगे ही न विचार

इंसान को? क्रोधी व्यक्ति हो तो ऐसा विचार आएगा या नहीं? बागी है.. इसलिए सच कह दिया। इसलिए मैंने उसका कंधा थपथपाया कि 'धन्य है कि मेरे सामने ही तुने मुझे गोली से उड़ाने की बात की। तूने सच बोला।' धन्य है इस युवावर्ग को। अगर इतना भी सत्य होगा तो युवावर्ग एकदम ऊँचे लेवल पर पहुँच जाएगा, तेज़ी से चढ़ जाएगा। युवावर्ग बहुत ही सुंदर है, बिल्कुल सच्चा। कोई सुख नहीं है, फिर भी सत्यता नहीं छोड़ता है।

तभी एक व्यक्ति ने मुझसे कहा कि, 'आप उसका कंधा थपथपा रहे हो, लेकिन आपके जैसे ऐसा सुन लेनेवाले भी नहीं मिलेंगे। गोलीबार करने को कह रहा है, फिर भी आप उसे थपथपा रहे हो? और कोई होता तो निकाल देता।' तब मैंने कहा, 'नहीं, हमारे यहाँ ऐसा नहीं होता।' अक्रम विज्ञान है यह तो। आप चाहे कितना भी विरोध करो लेकिन हमें हर्ज नहीं है। विरोध तो, हमारे अंदर कोई भूल है उस वजह से है। विरोध क्यों होगा? किसी भी प्रकार का विरोध हो तो वह मेरी ही भूल है। यानी युवा वर्ग तो बहुत अच्छी राह पर चल रहा है। उन्हें वैसे निमित्त मिल जाएँगे।

बिना बरकतवाले ही सुधरेंगे

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं कि आजकल की जनरेशन हेल्दी माइन्ड की है और दूसरी तरफ देखें तो सभी व्यसनी हैं और कितना ही है?

दादाश्री : भले ही वे व्यसनी दिखाई दें, लेकिन उन बेचारों को रास्ता न मिले तो और क्या होगा? उनका माइन्ड हेल्दी (मन तंदुरस्त) है।

प्रश्नकर्ता : बच्चे माँ-बाप का तिरस्कार करते हैं, माँ-बाप की सुनते नहीं हैं, ऐसे सब हैं न।

दादाश्री : वे तिरस्कार वगैरह इसलिए करते हैं, कि उन्हें मार्ग नहीं मिला है। अगर मार्ग मिल जाए तो ये बहुत अच्छे बच्चे हैं।

प्रश्नकर्ता : ये बच्चे ही बहुत बड़ी समस्या है।

दादाश्री : समस्या तो ज़बरदस्त बड़ी है लेकिन वह समस्या सुधर सकती है। इसी काल में ऐसे बच्चे हैं कि जिनमें बिल्कुल भी बरकत नहीं हैं और बरकत नहीं हो तभी सुधरेंगे। बरकतवाले नहीं सुधरेंगे। बरकतवाले तो अपने स्वार्थ में आगे होते हैं, और तिरस्कार होता है, दूसरा होता है, सब स्वार्थ में आगे होते हैं इसीलिए तो पूरा हिंदुस्तान बिगड़ गया न! इसके बजाय तो बिना बरकतवाला माल अच्छा। मान की नहीं पड़ी है, किसी भी प्रकार की कुछ भी नहीं पड़ी है।

आज की जनरेशन हेल्दी माइन्डवाली

प्रश्नकर्ता : हाँ, आजकल के बच्चों को मेरा-तेरा नहीं है, लेकिन मेरा-मेरा है।

दादाश्री : ऐसा भले ही लगे, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है बेचारों को। बहुत हेल्दी माइन्ड के हैं। मैं उन्हें अच्छी तरह पहचान सकता हूँ।

प्रश्नकर्ता : हेल्दी माइन्ड यानी क्या?

दादाश्री : हेल्दी माइन्ड यानी मेरा-तेरा की ज़्यादा पड़ी नहीं होती और हम जब छोटे थे न, तब किसी का कुछ बाहर रखा हो, तो ले लेने की इच्छा होती थी। किसी के यहाँ खाना खाने गए तो घर पर खाते हैं उसकी तुलना में थोड़ा ज़्यादा खा लेते थे।

यह तो मेरी खोज-बीन है। अगर कभी हेल्दी माइन्ड की जनरेशन पैदा हुई हो, तो वह इस काल में पैदा हुई है। हेल्दी होते-होते आई

है। हमारे समय से हेल्दी होते-होते आई लगती है, ममता ही नहीं है। मेरा कितना बुरा दिखेगा, ऐसा कुछ नहीं। लुंगी पहनकर भी घूमते रहते हैं। यानी ढंग नहीं है, उतना अच्छा है। इन लोगों में ढंग आने में देर नहीं लगेगी, संस्कार आने में देर नहीं लगेगी।

कुदरत का यह उपकार है कि यह जनरेशन बिल्कुल हेल्दी माइन्ड की पैदा हुई है! ऐसी कभी पैदा नहीं होती और जब पैदा होती है तब वर्ल्ड का कल्याण करती है! इन्हें मार्गदर्शन देनेवाला चाहिए।

प्रश्नकर्ता : किस तरह का मार्गदर्शन?

दादाश्री : अभी, मैं दे रहा हूँ। मेरे पास सभी को तैयार कर रहा हूँ। आजकल के ये जो लड़के-लड़कियाँ हैं, जो 25 साल के अंदर के हैं, वे सारे हेल्दी माइन्ड के हैं। मैं हेल्दी माइन्ड क्यों कह रहा हूँ क्योंकि उन्हें जैसा सिखाते हैं वैसे ही तैयार हो जाते हैं। पुराने रोग नहीं हैं। जब भूख लगे तब खाना ढूँढते हैं, और कुछ नहीं। ममता नहीं है इसलिए उसका बाप अगर अपना घर बेचने की सोचे, तो उसे अंदर कुछ पड़ी नहीं होती। और पुराने ज़माने में तो बाप से कहते थे, बेचना नहीं है आपको। आजकल तो हेल्दी माइन्डवाले हैं, ममता नहीं है। इसलिए जैसा बनाना हो वैसे बनाए जा सकते हैं। इसलिए यह प्रोफेसर ने लिखा है कि ग़ज़ब की खोज है, यह तो! इनका माइन्ड हेल्दी है!

प्रेमविहीन माँ-बाप

प्रश्नकर्ता : तो फिर आपकी दृष्टि से योग्य माँ-बाप किन्हें कहा जाएगा?

दादाश्री : माँ-बाप तो उन्हें कहा जाएगा कि बेटा अगर खराब लाइन (बुरे रास्ते) पर चला गया है तो एक दिन माँ-बाप कहें कि, 'भाई, यह हमें शोभा नहीं देता। यह तूने क्या किया?' दूसरे दिन से ही उसका बंद हो जाएगा। वैसा प्रेम ही कहाँ है? ये तो प्रेमविहीन माँ-बाप। यह जगत् प्रेम से ही वश में आता है। इन माँ-बाप को बच्चों पर कितना प्रेम है? माली को गुलाब के पौधे पर जितना प्रेम होता है, उतना! इन्हें माँ-बाप कैसे कह सकते हैं? 'अन्सर्टिफाइड फादर' एन्ड 'अन्सर्टिफाइड मदर।' फिर बच्चों की क्या हालत होगी?

सर्टिफाइड माँ-बाप ज्ञान के बाद

प्रश्नकर्ता : ज्ञान प्राप्त माता-पिता 'सर्टिफाइड माँ-बाप कहे जाएँगे क्या?

दादाश्री : हाँ। क्यों नहीं कह सकते? अब अपने महात्मा समझदार हो जाएँगे। ज्ञान लिया है, इसलिए बच्चे भी अच्छे बनेंगे, समझदार बनेंगे। क्योंकि माइल्डनेस (नम्रता) आता है, स्टंट (चालाकी) नहीं रहता। पहले तो स्टंट रहता था।

माँ-बाप के अलावा अन्य किसी के संस्कार नहीं आते। संस्कार माँ-बाप के, गुरु के और उनके फ्रेन्ड सर्कल का थोड़ा बहुत संयोग होता है। बाकी सब से उच्च संस्कार माँ-बाप के। अगर माँ-बाप संस्कारी होंगे तो बच्चे भी संस्कारी बनेंगे, वर्ना संस्कार होते ही नहीं न।

बच्चों को अगर सुधारना हो तो आपकी ज़िम्मेदारी है। बच्चों के साथ आप फर्ज़ से बँधे हुए हो। माँ-बाप ऐसे होने चाहिए कि उनका प्रेम देखकर बच्चे वहाँ से हटे नहीं। माँ-बाप को ऐसा प्रेममय बनना चाहिए।

- जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

19 मार्च : पूज्य नीरू माँ की 10वीं पूण्यतिथी के अवसर पर सीमंधर सिटी में सुबह प्रभात फेरी निकाली गई, जो अंत में नीरू माँ की समाधि पर पहुँची। प्रभात फेरी दौरान प्रसिद्ध दादाई पदों को DJ सीस्टम द्वारा बजाए गए। महात्माओं ने समूह में समाधि पर नित्यक्रम की प्रार्थना-विधियाँ की। पूज्य श्री ने समाधि पर पधारकर आशीर्वचन देते हुए नीरू माँ ने जैसा जीवन जिया ऐसे जीवन जीने की प्रेरणा लेने के लिए कहा। इस अवसर पर 'प्रेम से रहना, प्रोमिस?' लिखे हुए रीस्ट बैंड सभी महात्माओं को प्रसाद के रूप में दिए गए। पूज्य श्री द्वारा एडजस्ट ऐवरीव्हेर पर किया गया पारायण और बच्चों के लिए एनीमेटेड मोरल स्टोरी की सीडी का डीवीडी के रूप में विमोचन किया गया। दादानगर हॉल में पूज्य नीरू माँ के 'ज्ञान जागृति के अनुभवों' पर स्पेश्यल सीडी दिखाई गई और जगत् कल्याण के लिए एक घंटे की कीर्तन भक्ति की गई। आप्तसिंचन के 20 साधक भाईओं एवं 15 साधक बहनों की समर्पण विधि का विशेष कार्यक्रम शाम को आयोजित हुआ। साधकों ने बारी-बारी से आकर पूज्य श्री, अपने माता-पिता, रिश्तेदार एवं महात्माओं के आशीर्वाद लिए। कुछ साधकों ने और माता-पिता ने अपने हृदय स्पर्शी अनुभव कहें। पाँच आप्तकुमार भाईयों को आप्तपुत्र एवं एक आप्तकुमारी बहन को आप्तपुत्री की पदोन्नति मिली। दादानगर हॉल लगभग 12 हज़ार से भी ज़्यादा महात्माओं से भर गया। रात में भक्ति का विशेष कार्यक्रम रखा गया, जिसमें पद गुंजन और संस्था की अंतिम 10 सालों की उपलब्धि की जानकारी महात्माओं को दी गई।

20 मार्च : दादानगर हॉल में आयोजित ज्ञानविधि में 2050 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

21 मार्च : पूज्य श्री ने सीमंधर सिटी से यू.के.-जर्मनी सत्संग प्रवास के लिए प्रस्थान किया।

24-28 मार्च : हर साल की तरह इस साल भी यू.के. शिविर पोन्टिन्स-पेकफील्ड में आयोजित हुई। शिविर में 750 महात्माओं ने हिस्सा लिया, जिसमें लगभग 150 बच्चे और युवा थे। इस शिविर में हिस्सा लेने के लिए USA, ऑस्ट्रेलिया, केन्या, दक्षिण आफ्रिका, जर्मनी, स्पैन, लक्ज़मबर्ग और भारत जैसे विभिन्न देशों से महात्मा आए थे। इस साल यू.के. शिविर की थीम 'सर्कस' पर रखी गई थी। जिसमें सेवार्थी महात्माओं ने पूज्य श्री तथा महात्माओं का स्वागत सर्कस के जोकर की तरह लाल नाक एवं जोकर की तरह टोपी पहनकर किया था। बच्चों ने पूज्य श्री का स्वागत सुंदर गीत द्वारा किया। शिविर का आरंभ 'गुरु-शिष्य' किताब के पारायण से हुई। 'यह प्राप्त करवाए वीतरागता' एवं 'अभेदता', पूरे विश्व के साथ।' इन टॉपिक पर भी सत्संग-प्रश्नोत्तरी किए गए। बच्चों-युवाओं ने मिलकर 'फनफेयर' का आयोजन किया, जिसका उद्घाटन पूज्य श्री द्वारा रिबन काटकर किया गया। इस आनंदमेले में महात्माओं के लिए विविध प्रकार के खेल जैसे कि बुद्धि, प्रज्ञा, जागृति, मोक्ष, मोह ऐसे खेल उदाहरण के साथ खेलकर समझाए गए थे। कुछ खेल में हिस्सा लेकर पूज्य श्री ने बच्चों-युवाओं का उत्साह बढ़ाया। 40 बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में हिस्सा लिया था, जिसका नाम 'मेला-जमेला' था। जिसका मुख्य संदेश यह था कि 'ज्ञान की अग्नि से कषाय कैसे जल सकते हैं।' विभिन्न देशों के सेवार्थी महात्माओं ने अपनी सरप्राइज़ आइटम प्रस्तुत की थी, जिसमें उन्होंने सर्कस का एक बड़ा तंबू बनाया और तंबू का नाम 'जगत् कल्याण' रखा गया और ('एक-दूसरे' के पूरक बनकर) एक बीजाना पूरक थईने... पद गाकर उस पर परफोर्म किया था। युवाओं के लिए, MMHT और WMHT के स्पेश्यल सत्संग आप्तपुत्र-पुत्री द्वारा आयोजित किए गए। शिविरार्थीओं को पूज्य श्री के दर्शन एवं व्यक्तिगत मार्गदर्शन मिले इसलिए दादा-दरबार भी रखा गया।

30-31 मार्च : दो साल के बाद दक्षिण लंदन के क्रायडोन में पूज्य श्री का सत्संग रखा गया। पूज्य श्री के आगमन से स्थानिक महात्मा अति उत्साह में थे और पहले से ही सत्संग की तैयारियाँ में लग गए थे। सत्संग हॉल नए मुमुक्षु-महात्माओं से पूरा भर गया और उन्होंने उत्कंठा से प्रश्न पूछें । ज्ञानविधि के दौरान 75 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। काफी समय बाद यहाँ सत्संग-ज्ञानविधि होने के कारण और पूज्य श्री के आगमन से इस सेंटर में जोश आ गया।

Pujya Deepakbhai's USA-Canada Satsang Schedule 2016

Contact no. for all centers in USA & Canada: 1-877-505-DADA (3232) & email for USA - info@us.dadabhagwan.org

Date	Day	City	Session Title	From	To	Venue	Contact No. & Email
29-Jun	Wed	Houston, TX	Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Vallabh Preeti Seva Samaj Hall (VPSS) 11715 Bellfort Village Dr, Houston, TX 77031	Ext. 1013 houston@ us.dadabhagwan.org
30-Jun	Thu	Houston, TX	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
30-Jun	Thu	Houston, TX	Gnanvidhi	5-00 PM	9-00 PM		
1-Jul	Fri	Houston, TX	Aptaputra Satsang	6-30 PM	9-00 PM		
2-Jul	Sat	Dallas, TX	Satsang	4-30 PM	7-00 PM	D/FW Hindu Temple Society 1605 N. Britain Road Irving, TX 75061	Ext. 1026 dfw@ us.dadabhagwan.org
3-Jul	Sun	Dallas, TX	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
3-Jul	Sun	Dallas, TX	Gnanvidhi	3-30 PM	7-30 PM		
4-Jul	Mon	Dallas, TX	Aptaputra Satsang	6-30 PM	9-00 PM		
7-Jul	Thu	New York	Aptaputra Satsang	6-30 PM	9-00 PM	TBA	TBA
8-Jul	Fri	New Jersey	Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Edison Hotel 3050 Woodbridge Avenue, Edison, NJ 08837 (GPS Address 1173 King George Post Rd) Edison, NJ 08837)	Ext. 1020 newjersey@ us.dadabhagwan.org
9-Jul	Sat	New Jersey	Satsang	4-30 PM	7-00 PM		
10-Jul	Sun	New Jersey	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
10-Jul	Sun	New Jersey	Gnanvidhi	3-30 PM	7-30 PM		
11-Jul	Mon	New Jersey	Aptaputra Satsang	7-00 PM	9-30 PM		
15-Jul	Fri	Toronto, Canada	GP Shibir	9-30 AM	12-00 PM	Sheraton Parkway Toronto North Hotel & Suites Address: 9005 Leslie St, Richmond Hill, ON L4B 1B2, Canada	Ext 10 gp@ us.dadabhagwan.org
15-Jul	Fri	Toronto, Canada	SATSANG	4-30 PM	7-00 PM		
16-Jul	Sat	Toronto, Canada	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
16-Jul	Sat	Toronto, Canada	Gnanvidhi	3-30 PM	7-30 PM		
17-Jul	Sun	Toronto, Canada	GP Shibir	9-30 AM	12-00 PM		
17-Jul	Sun	Toronto, Canada	GP Shibir	4-30 PM	7-00 PM		
18-Jul	Mon	Toronto, Canada	GP Shibir	9-30 AM	12-00 PM		
18-Jul	Mon	Toronto, Canada	GP Shibir	4-30 PM	7-00 PM		
19-Jul	Tue	Toronto, Canada	GP Day	9-30 AM	12-00 PM		
19-Jul	Tue	Toronto, Canada	GP Day	4-30 PM	7-00 PM		
20-Jul	Wed	Toronto, Canada	GP SHIBIR	9-30 AM	12-00 PM		
26-Jul	Tue	Florence, AL	Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Ralph C Bishop Community Center 201 S. Washington Ave Russellville, AL 35653	Ext 1033 florence@ us.dadabhagwan.org
27-Jul	Wed	Florence, AL	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
27-Jul	Wed	Florence, AL	Gnanvidhi	5-00 PM	9-00 PM		
28-Jul	Thu	Florence, AL	Aptaputra Satsang	6-30 PM	9-00 PM		
29-Jul	Fri	Atlanta, GA	Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Gujarati Samaj 5331 Royalwood parkway, Tucker, GA , 30084	Ext. 1011 atlanta@ us.dadabhagwan.org
30-Jul	Sat	Atlanta, GA	Satsang	4-30 PM	7-00 PM		
31-Jul	Sun	Atlanta, GA	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
31-Jul	Sun	Atlanta, GA	Gnanvidhi	3-30 PM	7-30 PM		
5-Aug	Fri	Chicago, IL	Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Swaminarayan Temple@ 1020 Bapa Rd, Streamwood, IL 60107	Ext. 1005 chicago@ us.dadabhagwan.org
6-Aug	Sat	Chicago, IL	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM	Swaminarayan Temple @ 21W Irving Park Rd, Itasca, IL 60143	
6-Aug	Sat	Chicago, IL	Gnanvidhi	4-00 PM	8-00 PM		
7-Aug	Sun	Chicago, IL	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
9-Aug	Tue	Los Angeles, CA	Satsang	7-00 PM	9-30 PM	Sanatan Dharma Temple 15311 Pioneer Blvd. Norwalk CA 90650	Ext. 1009 losangeles@ us.dadabhagwan.org
10-Aug	Wed	Los Angeles, CA	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
10-Aug	Wed	Los Angeles, CA	Gnanvidhi	5-00 PM	9-00 PM		
11-Aug	Thu	Los Angeles, CA	Aptaputra Satsang	6-30 PM	9-00 PM		
12-Aug	Fri	San Jose, CA	Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Oasis Palace 35145 Newark Blvd Newark, CA 94560	Ext. 1024 northcalifornia@ us.dadabhagwan.org
13-Aug	Sat	San Jose, CA	Satsang	4-30 PM	7-00 PM		
14-Aug	Sun	San Jose, CA	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
14-Aug	Sun	San Jose, CA	Gnanvidhi	4-00 PM	8-00 PM		

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

नवादा	**दि.** 8 जुलाई	**संपर्क :** 7654057901	**पूर्णिया**	**दि.** 14 जुलाई	**संपर्क :** 9546817581
बख्तियारपुर	**दि.** 9 जुलाई	**संपर्क :** 9470083078	**कटिहार**	**दि.** 15 जुलाई	**संपर्क :** 7759929535
पटना	**दि.** 10 जुलाई	**संपर्क :** 7352723132	**कोलकाता**	**दि.** 17 जुलाई	**संपर्क :** 9830093230
वैशाली	**दि.** 11 जुलाई	**संपर्क :** 9708234981	**गुवाहाटी**	**दि.** 18 जुलाई	**संपर्क :** 9327010101
मुजफ्फरपुर	**दि.** 12 जुलाई	**संपर्क :** 9939540790	**गुवाहाटी**	**दि.** 19 जुलाई	**संपर्क :** 9327010101

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'आस्था'** पर सोम से शनि रात 10-20 से 10-40 (हिन्दी में)
- **'डीडी'-इन्डिया** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)

USA
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शुक्र सुबह 8-30 से 9, शनि सुबह 9 से 9-30 , रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर मंगल से गुरु रात 9-30 से 10-30, शुक्र से रवि रात 9-30 से 10 (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8-30 से 9 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)

USA
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST (हिन्दी में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

Singapore
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

Australia
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)

New Zealand
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)

USA-UK-Africa-Aus. - **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात 10 से 10-30

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345#. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

बंगलौर

11 जून (शनि), शाम 6 से 9 – **सत्संग** तथा **12 जून** (रवि), शाम 5-30 से 9 – **ज्ञानविधि**

12 जून (रवि), सुबह 10-30 से 12-30 – **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : ज्ञानज्योति ओडिटोरीयम, सेन्ट्रल कोलेज केम्पस, पेलेस रोड, मैसुर बैंक सर्कल पास. **संपर्क :** 9590979099

13 जून (सोम), शाम 6 से 9 –**आप्तपुत्र के द्वारा फोलोअप सत्संग**

स्थल : महाराष्ट्र मंडल, 2 क्रोस रोड, गांधीनगर, बंगलौर. **संपर्क :** 9590979099

हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष 2016

27 मई (शुक्र) – सुबह 10 से 12 – **प्रतिक्रमण – पारायण** तथा शाम 4-30 से 7 – **पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार – सत्संग**

28 मई (शनि) – सुबह 9 से 11-30 तथा शाम 4-30 से 7 – **पूज्यश्री द्वारा विशेष सत्संग (WMHT - MMHT)**

29 मई (रवि) – सुबह 9 से 11-30 – **प्रश्नोत्तरी सत्संग** तथा शाम 4-30 से 7 – **ज्ञानविधि**

30 मई (सोम) – सुबह 9 से 11-30 – **दर्शन** तथा **मा-बाप बच्चों का व्यवहार – सत्संग**

शाम 4-30 से 7–**पाँच आज्ञा पर विशेष सत्संग**

31 मई (मंगल) – सुबह 6-30 बजे से **पूज्यश्री के संग अंबाजी-महेसाणा** की एक दिवसीय यात्रा

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। **इस शिविर के लिए रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।** रजिस्ट्रेशन कराने के बाद यदि आप किसी कारणवश नहीं आनेवाले हो, तो अपना रजिस्ट्रेशन केन्सल करवाना न भूलें।

अडालज में अविवाहित युवकों के लिए हिन्दी में ब्रह्मचर्य शिविर - दि. 1-2 जून, 2016

जो युवक इस ब्रह्मचर्य शिविर में भाग लेना चाहते है, उसकी उम्र २१ से ३५ के बीच और आत्मज्ञान लिए कम से कम १ साल हुआ होना जरूरी है। कृपया अधिक जानकारी और रजिस्ट्रेशन के लिए 09723707737 पर संपर्क करें।

अडालज त्रिमंदिर

18 अगस्त (गुरु) सुबह 8-30 से 11-30 – **रक्षाबंधन** के अवसर पर दर्शन-भक्ति का विशेष कार्यक्रम

20 अगस्त (शनि) शाम 4 से 7 – **सत्संग** तथा **21 अगस्त** (रवि), दोपहर 4-30 से 7 – **ज्ञानविधि**

25 अगस्त (गुरु) रात 10 से 12 – **जन्माष्टमी** के अवसर पर विशेष भक्ति का कार्यक्रम

28 अगस्त (रवि) सुबह 9 बजे से – **दर्शन** का विशेष कार्यक्रम

29 अगस्त से 5 सितम्बर (सोम से सोम) **पर्युषण पारायण – आप्तवाणी 13 (पू.)** पर **वांचन-सत्संग-प्रश्नोत्तरी**

पर्युषण के दौरान आप्तवाणी-13 (पू.) (गुजराती) पर वाचन और उसी विषय पर सत्संग होगा। गुजराती नहीं समज सकते उनके लिए रेडियो सेट द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का FM रेडियो और हेडफोन लेकर आए। (अगर आपका मोबाइल एफएम सुविधावाला है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकते है।)

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460,

अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830093230

यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

मई 2016
वर्ष - 11 अंक - 7
अखंड क्रमांक - 127

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

इस तरह सुधारो बच्चों को

बच्चे में दुर्गुण हों, बच्चे को चोरी की बुरी आदत पड़ जाए तो माँ-बाप उसे डाँटते रहते हैं, मारते रहते हैं। तब बेटा क्या करता है? मन में तय करता है कि 'भले ही वे बोलते रहें, मैं तो ऐसा ही करूँगा।' मतलब बेटे को माँ-बाप और अधिक चोर बनाते हैं। बेटे को बदलने का तरीका अलग है। उसके भाव बदलने हैं। उस पर प्रेम से हाथ फेरकर कहना कि, 'बेटा, तूने इस तरह किसी की चोरी की, वैसे ही अगर कोई तेरी जेब से चोरी करे तो तुझे सुख होगा ? उस समय तुझे अंदर कैसा दुःख होगा? वैसे ही क्या सामनेवाले को भी दुःख नहीं होगा? इस तरह पूरी थ्योरी (बात) बेटे को समझानी पड़ेगी। एक बार उसके अंदर पक्का हो जाना चाहिए कि यह गलत है। आप उसे मारते रहते हो, उससे तो बच्चे ढीठ होते जाते हैं। सिर्फ तरीका ही बदलना है। पूरी दुनिया ने स्थूल कर्म को ही समझा है, सूक्ष्म कर्म को समझा ही नहीं है। सूक्ष्म को समझा होता तो यह दशा नहीं होती।

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.